इकाई 1 भौगोलिक क्षेत्र[1] और स्रोत*

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 भौगोलिक क्षेत्र
  1.2.1 विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयाँ
1.3 ऐतिहासिक क्षेत्रों के उदय की असमान प्रक्रियाएं
1.4 क्षेत्रों की प्रकृति
1.5 प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत
  1.5.1 साहित्यिक स्रोत
  1.5.2 पुरातत्व
  1.5.3 विदेशी वृतान्त
1.6 सारांश
1.7 शब्दावली
1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.9 संदर्भ ग्रन्थ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप जानेंगे कि :

- किसी देश के इतिहास के अध्ययन में उसकी भौतिक विशेषताओं की समझ क्यों आवश्यक है;
- हम इतिहास के छात्रों के रूप में भौतिक विशेषताओं को कैसे देखते हैं;
- प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार के स्रोत क्या हैं; तथा
- साहित्यिक स्रोतों के उपयोग से जुड़ी समस्याएं क्या हैं।

1.1 प्रस्तावना

बिना भूगोल के इतिहास प्रायः अधूरा रहता है और अपने एक प्रमुख तत्व से वंचित हो जाता है। यानि भूभाग/भूमंडल की अवधारणा के अभाव में इतिहास अपने लक्ष्य से भटक सकता है। यही कारण है कि इतिहास को मानव जाति के इतिहास और पर्यावरण के इतिहास, दोनों ही रूपों में देखा जाता है। इन दोनों को अलग करना कठिन है। मानव इतिहास और पर्यावरण का इतिहास दोनों ही परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मनुष्यों और प्रकृति के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान बहुत समय पहले शुरू हुआ, जहां प्रत्येक ने दूसरे को प्रभावित किया। भारतीय उपमहाद्वीप में रेगिस्तान से लेकर उच्च वर्षा के क्षेत्रों और विशाल

---

[1] यह भाग ई.एच.आई.-02, खंड-1 से लिया गया है।

*इकाई के इस भाग को डॉ. शुचि दयाल, सलाहकार, इतिहास विभाग, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू द्वारा लिखा गया है।

जलोढ़ मैदानी इलाकों से लेकर ऊँचे पहाड़ों और चट्टानी पठार भूमियों तक विविध परिस्थितियां हैं। पर्यावरण का अर्थ है, ''विशेष रूप से लोगों के जीवन को प्रभावित करने वाले भौतिक परिवेश और परिस्थितियाँ'' (वर्तमान अंग्रेज़ी का संक्षिप्त शब्दकोश, 8वां संस्करण, 1990)। मिट्टी, वर्षा, वनस्पति, जलवायु और पर्यावरण मानव समाज के विकास पर काफ़ी प्रभाव डालते हैं।

इस इकाई के बाद का हिस्सा विभिन्न प्रकार के स्रोतों का परिचय देता है जो इतिहासकार अतीत के पुनर्निर्माण के लिए उपयोग करते हैं। तीन मुख्य प्रकार के स्रोत हैं : साहित्यिक, पुरातात्विक और विदेशी वृतान्त।

1.2 भौगोलिक क्षेत्र

भौतिक विशेषताओं का वर्णन करने के पीछे मुख्य उद्देश्य आपको भारत के विभिन्न हिस्सों की स्थलाकृति में दिखाई देने वाली भिन्नताओं से परिचित कराना है। किसी भी क्षेत्र के भौतिक भूगोल और उसके बसावट के प्रतिरूपों (Settlement patterns) के बीच एक गहरा रिश्ता है।

भू-आकृतिक लक्षणों के आधार पर उपमहाद्वीप को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1) हिमालय के पर्वतीय प्रदेश,

2) सिंधु-गंगा के मैदान,

3) प्रायद्वीपीय भारत।

यह माना जाता है कि हिमालय पर्वत पृथ्वी की सबसे अंतभव पर्वत श्रृंखला है। हिमालय की पर्वतीय श्रृंखलाओं के अपक्षय और भूमि कटाव के कारण जलोढ़ यानी कछारी मिट्टी निरंतर बह कर भारी मात्रा में मैदानी क्षेत्रों में आती है। हिमालय की बर्फ के पिघलते रहने से सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र, इन तीन बड़ी नदियों में निरंतर जल प्रवाह बना रहता है।

सिंधु के मैदानों में भारतीय उपमहाद्वीप की पहली सभ्यता का विकास हुआ जबकि गंगा के मैदानों में पहली सहस्राब्दि बी.सी.ई. से नगरीय जीवन, राज्य, समाज और साम्राज्य संबंधी ढांचे का पोषण और विकास हुआ।

उत्तर के मैदानों और प्रायद्वीपीय भारत को एक विशाल मध्यवर्ती क्षेत्र, जिसे मध्य-भारत कहा जा सकता है, अलग करता है। यह मध्यवर्ती क्षेत्र गुजरात से लेकर पश्चिमी उडिशा तक लगभग 1600 किलोमीटर तक फैला हुआ है। राजस्थान की अरावली पहाड़ियाँ सिंधु के मैदानों को प्रायद्वीप से अलग करती है। मध्यवर्ती क्षेत्र में विंध्याचल और सतपुड़ा की पर्वत श्रेणियां और छोटा नागपुर का पठार है जो बिहार, पश्चिमी बंगाल, उडिशा, झारखंड और छतीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों तक फैला है।

मध्यवर्ती क्षेत्र या मध्य भारत के दक्षिणी सिरे पर वह भू-रचना शुरू होती है जिसे प्रायद्वीपीय भारत कहा जाता है। इसमें चार प्रमुख नदियां हैं जो बंगाल की खाड़ी में गिरती हैं। ये नदियां हैं महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी। इन नदियों के कारण इस पठारी क्षेत्र में जलोढ़ मैदान बने और इन मैदानों तथा नदियों के दहानों (deltas) में मूल आवास क्षेत्रों का विकास हुआ। यहां दीर्घ काल तक सांस्कृतिक विकास की धारा प्रवाहित हुई जो प्राचीन काल से प्रारंभ होकर मध्य काल से होते हुए आधुनिक काल तक निरंतर बहती रही।

मध्य भारत में बहने वाली नर्मदा और ताप्ती नदियों का प्रवाह पश्चिम की ओर है। पर्वतीय मध्य भारत में लम्बी दूरी तय करने के बाद ये नदियां गुजरात के अरब सागर में गिरती हैं।

उपमहाद्वीप के इस भाग की प्रमुख विशेषता दक्कन का पठार है। यह उत्तर में विंध्य पर्वत श्रेणियों से लेकर कर्नाटक की दक्षिणी सीमाओं तक फैला हुआ है। महाराष्ट्र तथा मध्य भारत के भू-भागों में काली मिट्टी विशेष रूप से उपजाऊ है, क्योंकि इसमें नमी बनी रहती है और इस जमीन को स्वहलित भूमि यानी ऐसी भूमि माना जाता है जिसमें जुताई की आवश्यकता नहीं होती। यह भूमि कपास, ज्वार, मूंगफली और तिलहन की अच्छी फसल देती है। पश्चिम और मध्य भारत में प्रारंभिक कृषि संस्कृतियां (ताम्र पाषाण संस्कृति) इसी क्षेत्र में उदित हुई।

1.2.1 विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयाँ

अभी तक हमने मोटे तौर पर भौगोलिक विभाजनों की विशेषताओं का सामान्य आधार पर विवेचन किया है। अब हम उन विशिष्ट प्रमुख भौगोलिक इकाइयों को लेंगे जो आमतौर पर भाषा पर आधारित विभाजनों को पुष्ट करती है, और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से उनकी प्राकृतिक विशेषताओं की चर्चा करेंगे।

हिमालय और पश्चिमी सीमा प्रदेश

हिमालय पर्वतों को तीन प्रमुख भागों में बांटा जा सकता है :

- पूर्वी हिमालय,
- पश्चिमी हिमालय, और

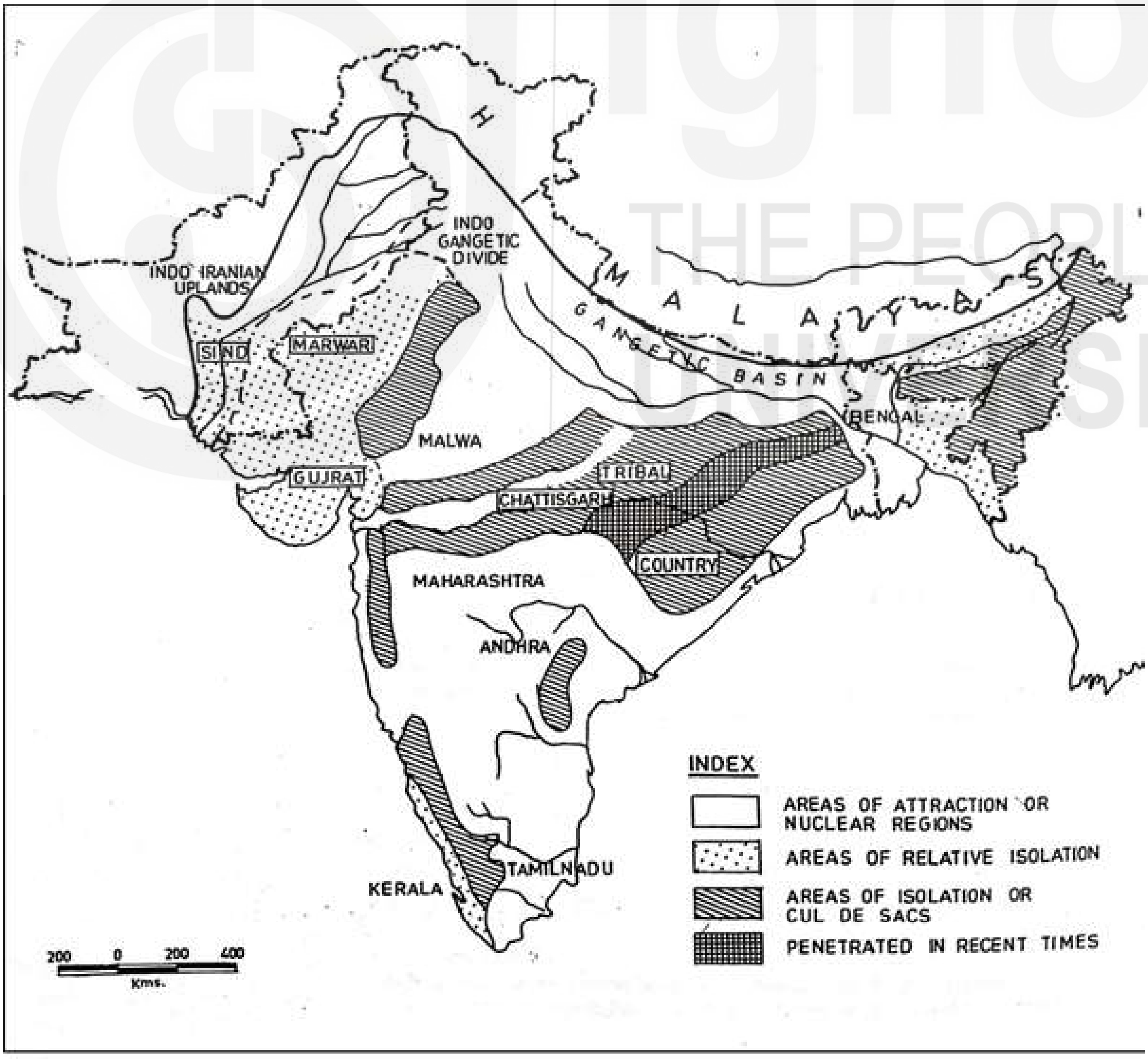
H
I
M
A
L
A
Y
A
INDO GANGETIC DIVIDE
INDO IRANIAN UPLANDS
SIND
MARWAR
GANGETIC BASIN
BENGAL
MALWA
GUJRAT
TRIBAL
CHATTISGARH
COUNTRY
MAHARASHTRA
ANDHRA
KERALA
TAMILNADU
INDEX
AREAS OF ATTRACTION OR NUCLEAR REGIONS
AREAS OF RELATIVE ISOLATION
AREAS OF ISOLATION OR CUL DE SACS
PENETRATED IN RECENT TIMES
200 0 200 400
Kms.

मानचित्र : भारत के प्राकृतिक क्षेत्र। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड-1.

- मध्यवर्ती हिमालय।

पूर्वी हिमालय पर्वत श्रृंखला ब्रह्मपुत्र के पूर्व में उत्तर दक्षिण दिशा में असम से लेकर दक्षिण चीन तक फैली हुई है। हालांकि पूर्वी हिमालय पर्वतमाला के बीच से गुज़रने वाले मार्ग दुर्गम हैं, फिर भी प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक कालों में दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण चीन से सांस्कृतिक प्रभावों का आना नहीं रूका।

मध्यवर्ती हिमालय पर्वत श्रृंखलाएं, जो भूटान से चित्राल तक फैली हुई हैं, तिब्बत के विशाल पठार की सीमा पर स्थित हैं। भारत और तिब्बत के बीच व्यापार तथा अन्य प्रकार के संबंध इसी सीमा प्रदेश के माध्यम से बने रहे। संकरी हिन्दुकुश पर्वत श्रृंखला हिमालय से दक्षिण पश्चिम की ओर गांधार प्रदेश को घेरती हुई अफ़ग़ानिस्तान में दूर तक फैली है। भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से पश्चिमी अफ़ग़ानिस्तान का गहरा संबंध पूर्वी ईरान से है। लेकिन दक्षिण-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान सांस्कृतिक रूप से नवपाषाण काल से ही भारतीय

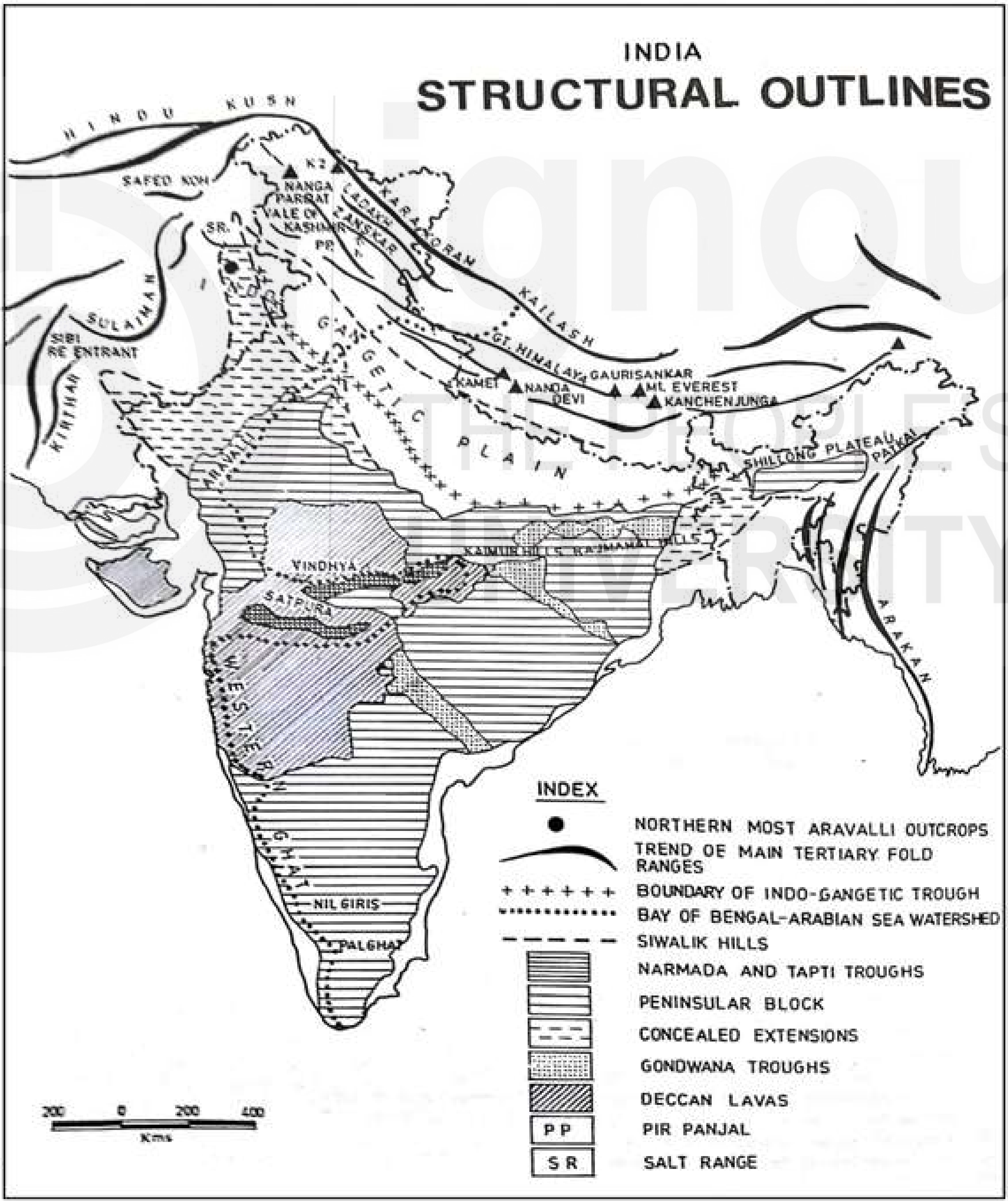
INDIA
STRUCTURAL OUTLINES
HINDU KUSH
SAFED KOH
K2
NANGA PARBAT
VALE OF KASHMIR
SR.
PP.
LADAKH
ZANSKAR
KARAKORAM
SULAIMAN
SIBI RE ENTRANT
KIRTHAR
INDO
GANGETIC PLAIN
KAILASH
GT. HIMALAYA
GAURISANKAR
KAMET
NANDA DEVI
MT. EVEREST
KANCHENJUNGA
SHILLONG PLATEAU
PATKAI
ARAKAN
ARAVALLI
VINDHYA
KAIMUR HILLS
RAJMAHAL HILLS
SATPURA
WESTERN GHAT
NILGIRIS
PALGHAT
INDEX
NORTHERN MOST ARAVALLI OUTCROPS
TREND OF MAIN TERTIARY FOLD RANGES
BOUNDARY OF INDO-GANGETIC TROUGH
BAY OF BENGAL-ARABIAN SEA WATERSHED
SIWALIK HILLS
NARMADA AND TAPTI TROUGHS
PENINSULAR BLOCK
CONCEALED EXTENSIONS
GONDWANA TROUGHS
DECCAN LAVAS
PP
PIR PANJAL
SR
SALT RANGE
200
0
200
400
Kms

मानचित्र : भारत का संरचनात्मक रेखाचित्र। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड-1.

उपमहाद्वीप के निकट रहा है। खैबर दर्रा और अन्य दर्रे तथा काबुल नदी इस क्षेत्र को सिन्धु के मैदानों से जोड़ते हैं। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि अफ़ग़ानिस्तान के इस भाग में स्थित शोर्तुगई हड़प्पा की सभ्यता का एक प्रमुख व्यापारिक बाह्य-केन्द्र था। काबुल और कन्धार जैसे प्राचीन नगर ईरान और भारत के बीच व्यापार मार्गों पर स्थित थे।

वे सभी प्रमुख मार्ग जो अफ़ग़ानिस्तान से होकर भारत के मैदानों को ईरान और मध्य एशिया से जोड़ते हैं, गोमल, बोलन और खैबर दर्रों से होकर जाते हैं। ऐतिहासिक कालों अथवा उससे भी पहले से व्यापारी, हमलावर और विविध सांस्कृतिक प्रभाव इन सभी प्रमुख मार्गों से होकर भारत आते रहे। यूनानी, शक, कुषाण, हूण आदि इन्हीं मार्गों से भारत आए। बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के अन्य प्रभाव अफ़ग़ानिस्तान और मध्य-एशिया तक इन्हीं दर्रों

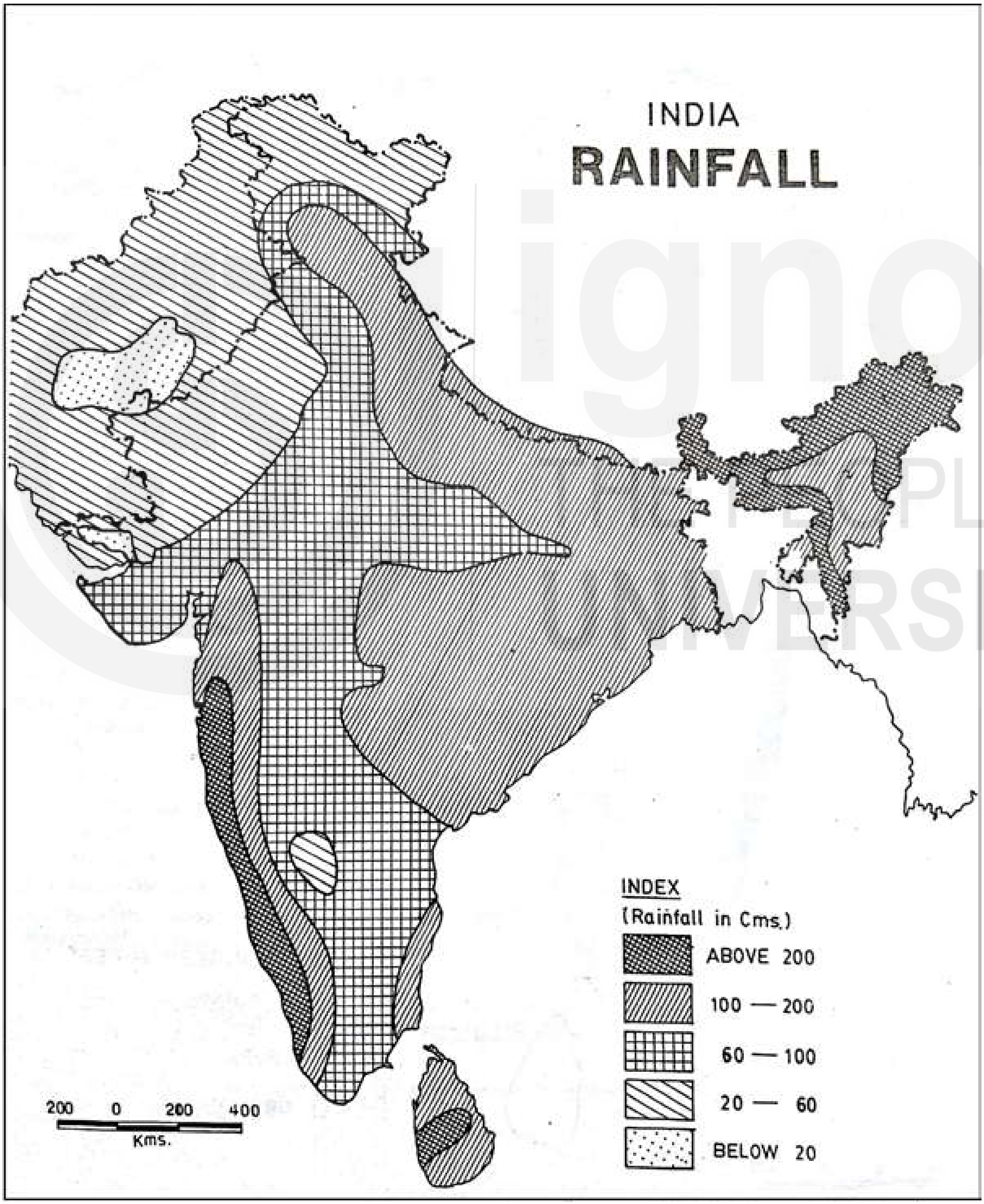
INDIA
RAINFALL
INDEX
(Rainfall in Cms.)
ABOVE 200
100 — 200
60 — 100
20 — 60
BELOW 20
200 0 200 400
Kms.

मानचित्र : भारत के वर्षा क्षेत्र। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड-1.

ignou PLE'S VERSITY

से होकर पहुँचे। इस तरह ऐतिहासिक रूप से अफ़ग़ानिस्तान और बलूचिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र महत्वपूर्ण सीमान्त क्षेत्र रहे हैं।

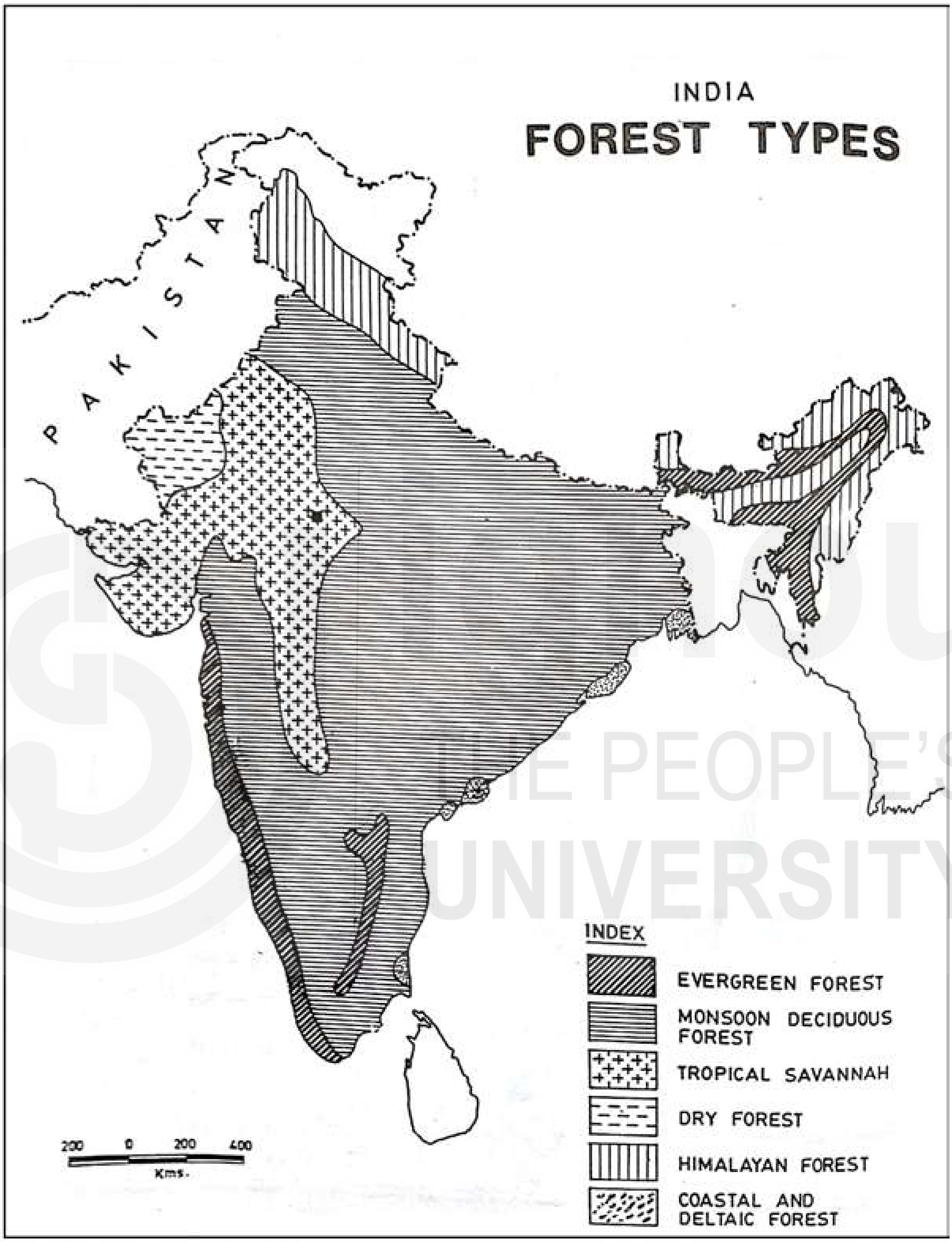
INDIA
FOREST TYPES
PAKISTAN
INDEX
▨ EVERGREEN FOREST
▤ MONSOON DECIDUOUS FOREST
TROPICAL SAVANNAH
DRY FOREST
▥ HIMALAYAN FOREST
COASTAL AND DELTAIC FOREST
200 0 200 400
Kms.

मानचित्र : भारत के वनों के प्रकार। स्रोत : ई.एच.आई.-02, खंड-1.

सिंधु के मैदान

इन दर्रों से निकलने वाले ये मार्ग सिंधु के उपजाऊ मैदानों की तरफ़ ले जाते हैं। इस मैदानी क्षेत्र को दो भागों में बांटा जा सकता है:

- पंजाब, और
- सिंध।

पंजाब (इस समय भारत और पाकिस्तान के बीच विभाजित) का शाब्दिक अर्थ है पांच नदियों की भूमि। ये हैं रावी, ब्यास, चेनाब, झेलम और सतलुज। विस्तृत जलोढ़ मैदान के बीच में बहने वाली सिंधु नदी की पाँच सहायक नदियों ने इस क्षेत्र को उपमहाद्वीप का बहु-धान्य प्रदेश बना दिया है। पंजाब विभिन्न संस्कृतियों का मिलन-स्थल और उनके परस्पर एकीकृत होने का स्थान रहा है।

सिंधु घाटी का निचला क्षेत्र और दहाता मिलकर सिंध प्रदेश का निर्माण करते हैं। सिंध प्रदेश सिंधु नदी का प्रदेश है और बड़ी मात्रा में चावल और गेहूँ उत्पन्न करता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, सिंधु मैदान में तीसरी सहस्त्राब्दि बी.सी.ई. के उत्तरार्ध व दूसरी सहस्त्राब्दि बी.सी.ई. के पूर्वार्ध के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप की पहली नगरीय संस्कृति पनपी। इनके दो प्रमुख नगर हड़प्पा और मोहनजोदड़ो क्रमशः पंजाब (पाकिस्तान) और सिंध में स्थित हैं।

गांगेय उत्तरी भारत

गंगा के मैदानी क्षेत्र को तीन उप-क्षेत्रों में बांटा जा सकता है :

- ऊपरी क्षेत्र,
- मध्य क्षेत्र, और
- निचला क्षेत्र।

पश्चिम और मध्य उत्तर प्रदेश के ऊपरी मैदानी क्षेत्र में अधिकांश दोआब का इलाका शामिल है। यह संघर्ष और सांस्कृतिक संश्लेषण का क्षेत्र रहा है। हड़प्पा संस्कृति के इस क्षेत्र तक फैले होने के बहुतायत में साक्ष्य उपलब्ध हुए हैं। यह क्षेत्र चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति का केन्द्र भी था और उत्तर-वैदिक काल में हलचल भरी गतिविधियों का केन्द्र था।

प्रयागराज (प्राचीन प्रयाग) दोआब की सीमा पर गंगा और यमुना नदियों के संगम पर स्थित है। गांगेय मैदान का मध्य क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार तक फैला हुआ है। यह वही क्षेत्र है जहां प्राचीन कोसल, काशी और मगध स्थित थे। यह क्षेत्र छठी शताब्दी बी.सी.ई. से ही नगरीय जीवन, मौद्रिक अर्थव्यवस्था और व्यापार का केन्द्र रहा है। इस प्रदेश ने मौर्य साम्राज्य के विस्तार को आधार प्रदान किया और यह भू-प्रदेश राजनीतिक दृष्टि से गुप्तकाल (पांचवी शताब्दी सी.ई.) तक महत्वपूर्ण बना रहा।

गंगा के मैदानों का ऊपरी और मध्य क्षेत्र भौगोलिक रूप से उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणियों और दक्षिण में मध्य भारत की पर्वत श्रृंखलाओं से सीमाबद्ध होता है। मैदान का निचला क्षेत्र बंगाल प्रान्त तक फैला हुआ है। बंगाल का विस्तृत मैदान गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ यानी कछारी मिट्टी से निर्मित हुआ है।

अन्य वृहद बसावट वाले क्षेत्रों की तुलना में गंगा का मैदान अनेक घनी बस्तियों वाला क्षेत्र रहा है। जनसंख्या घनत्व भी यहां अपेक्षाकृत अधिक रहा है। पहली सहस्त्राब्दि बी.सी.ई से ही यह क्षेत्र भारतीय सभ्यता का मुख्य केन्द्र रहा है। अति प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक इस प्रदेश की यही स्थिति बनी हुई है। बंगाल के मैदान से लगी हुई ब्रह्मपुत्र द्वारा निर्मित दूर तक फैली असम घाटी है। यह 600 किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्र में फैली हुई है। सांस्कृतिक रूप से असम बंगाल के निकट है। लेकिन ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से यह प्रदेश उडिशा की तरह देर से विकास प्रक्रिया में आने वाला प्रदेश है।

पूर्वी, पश्चिमी और मध्य भारत

मध्य भारत एक पूरी तरह से भिन्न प्रकार का क्षेत्र है और उसमें कोई भी ऐसा विशेष स्थान नहीं है जिसे केन्द्र स्थान मान कर बात की जा सके। अरावली पर्वत श्रृंखला के पूर्व में राजस्थान राज्य का दक्षिण-पूर्वी भाग मालवा उपक्षेत्र का एक अंग है। इस प्रदेश की मिट्टी उपजाऊ है। इसलिए यहां सिंचाई के अभाव के बावजूद अच्छी फसलें हो जाती हैं। इस प्रदेश में ताम्र-पाषाण युगीन बस्तियां काफ़ी संख्या में फैली हुयी हैं। इसकी भौगोलिक स्थिति को देखते हुए प्रतीत होता है कि यह प्रदेश हड़प्पा-कालीन समुदायों और मध्य भारत तथा उत्तरी दक्कन के दूसरे ताम्र पाषाण युगीन समुदायों के बीच पुल के रूप में रहा होगा।

मध्य भारत आज मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के नाम से जाना जाता है। मध्य भारतीय क्षेत्र, जिसमें विशेष रूप से दक्षिण बिहार, पश्चिम उडिशा और पूर्वी मध्य प्रदेश आते हैं, आदिवासी बहुल क्षेत्र है। इस प्रदेश के आदिवासी निकटवर्ती क्षेत्रों के सांस्कृतिक प्रभाव में आकर प्रारंभिक ऐतिहासिक कालों से, या कहें कि गुप्त काल से ही, भारतीय समाज के प्रमुख जाति-कृषक आधार वाले ढांचे से जुड़ते रहे।

गुजरात मध्य भारत क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। यह प्रदेश तीन प्राकृतिक भागों में बंटा हुआ है : सौराष्ट्र, अनर्त (उत्तरी गुजरात) और लाट (दक्षिण गुजरात)। गुजरात का मध्यवर्ती प्रायद्वीप काठियावाड़ कहलाता है। इस प्रदेश का एक और प्राकृतिक भाग कच्छ के रण का निचला इलाका है। मानसून के दिनों में कच्छ का रण दलदलीय क्षेत्र में बदल जाता है। हालांकि गुजरात एक अलग-थलग क्षेत्र प्रतीत होता है, किन्तु वास्तव में यह हड़प्पा कालीन समय से ही निरंतर प्राचीन बस्तियों का क्षेत्र रहा है। अपनी संरक्षित स्थिति और लंबी तट रेखा के कारण गुजरात 4000 वर्षों से अधिक समय से तटीय (समुद्र तटीय) और विदेशी व्यापार का केन्द्र रहा है।

मध्य भारत पर्वत श्रृंखलाओं के पूर्वी छोर पर गंगा के दहाने के दक्षिण-पश्चिम में उडिशा के तटवर्ती मैदान हैं। समृद्ध कृषि आधार वाला उपजाऊ तटवर्ती मैदान मानव गतिविधि का स्थल और सामाजिक सांस्कृतिक विकास का केन्द्र रहा है। उडिशा ने अपनी भाषाई और सांस्कृतिक पहचान देर से पहली शताब्दी सी.ई. में बनाई।

प्रायद्वीपीय भारत

प्रायद्वीपीय भारत की सीमाएं इसको घेरने वाले तटवर्ती मैदानों और दक्कन के पठार से निर्धारित होती है। दक्कन का पठार चार प्रमुख भागों में बंटा हुआ है। ये भाग महाराष्ट्र, आंध्र, तेलंगाना और कर्नाटक राज्यों में पड़ते हैं। दक्षिण-पश्चिम आन्ध्र के प्रारंभिक नव-पाषाण युगीन लोगों ने अनुकूल व्यवहार नीति के रूप में पशु चारण को अपनाया तो दक्कन ताम्र-पाषाण युगीन मानव समुदायों ने कृषि को अपना उद्यम बनाया।

सुदूर दक्षिण

दक्षिण में विस्तृत पूर्वी तटवर्ती मैदान और इससे जुड़े भीतरी प्रदेश तमिलनाडु में आते हैं। कावेरी का मैदान और इसका दहाना इस क्षेत्र का अधिकेन्द्र है। इस क्षेत्र की नदियां मौसमी हैं इसलिए यहां के किसान पल्लव-चोल कालों से ही सिंचाई के लिए तालाबों पर निर्भर रहते आए हैं। इन पारिस्थितिक विविधिताओं का उल्लेख, जिनके कारण विविध वैकल्पिक जीवन शैलियाँ अस्तित्व में आईं, इस भूमि के प्राचीनतम् साहित्य यानी *संगम* साहित्य में प्राप्त होता है।

पश्चिमी तटवर्ती मैदान भी सुदूर दक्षिण में मालाबार यानी आज के केरल राज्य तक फैला हुआ है। केरल में धान तथा अन्य फसलों के अलावा काली मिर्च तथा अन्य मसालों का

उत्पादन भी होता है। पश्चिम के साथ केरल इन मसालों का व्यापार उत्तर-मौर्य काल से ही करता आया है। भूमि से अपेक्षाकृत अलग-थलग केरल राज्य समुद्र की ओर से पूरी तरह से खुला हुआ है। यह एक रोचक सत्य है कि भारत में ईसाई प्रभाव और बाद में मुस्लिम प्रभाव समुद्र के माध्यम से ही आया।

1.3 ऐतिहासिक क्षेत्रों के उदय की असमान प्रक्रियाएं

यह याद रखना चाहिए कि इतिहास में क्षेत्रों के उद्भव की प्रक्रियाएं असमान रही हैं। अनेक क्षेत्रों में सांस्कृतिक विकास की असमान प्रक्रिया तथा ऐतिहासिक शक्तियों का असमान विन्यास भूगोल से अत्यधिक प्रभावित रहा।

क्षेत्रों के असमान्य विकास को ऐतिहासिक स्थितियों द्वारा दर्शाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, तीसरी सहस्त्राब्दि बी.सी.ई. के उत्तरार्ध में गुजरात में मध्य-पाषाण युगीन संस्कृति मौजूद थी जबकि इसी समय दक्कनी क्षेत्रों में नवपाषाण-युगीन पशुपालक काफ़ी संख्या में मौजूद थे। ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि अन्य क्षेत्रों की इन संस्कृतियों के युग में ही हड़प्पा जैसी विकसित सभ्यता विद्यमान थी। फलतः विकास के विभिन्न चरणों में क्षेत्रों एवं संस्कृतियों के एक दूसरे से प्रभावित होने के प्रमाण मिले हैं। यह प्रक्रिया भारतीय इतिहास के हर दौर में दिखाई देती है। दूसरे शब्दों में, जहां एक ओर सिंधु एवं सरस्वती के क्षेत्रों में घुमक्कड़ लोग तीसरी सहस्राब्दि बी.सी.ई. में बसने लगे थे, वहीं दूसरी ओर दक्कन, आंध्र, तमिलनाडु, उडिशा एवं गुजरात में बड़े पैमाने पर खेतिहार समुदाय बुनियादी रूप से लौह-युग में गठित हुए जो कि प्रथम सहस्त्राब्दि बी.सी.ई. का उत्तरार्ध अनुमानित किया जा सकता है। हालांकि उत्तर में गांगेय क्षेत्र बहुत पहले से ही बसावट का केन्द्र रहा, वही बीच के काफ़ी क्षेत्र अथवा मध्य भारत की जंगली पहाड़ियां कभी भी पूरी तरह नहीं बसी और आदिम युगीन अर्थव्यवस्था के विभिन्न चरणों में आदिवासियों को शेष मानव समाज से अलग रहने का अवसर देती रहीं। इस उपमहाद्वीप में सभ्यता तथा पारंपरिक सामाजिक संगठन के रूप में अधिक जटिल संस्कृति विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न कालों में पहुंची तथा अपेक्षाकृत अधिक विकसित भौतिक संस्कृति का क्षेत्रीय प्रसार काफ़ी आसान रहा।

1.4 क्षेत्रों की प्रकृति

क्षेत्रों को वर्गीकृत करने का एक और तरीका उन्हें स्थायी केन्द्रीय क्षेत्रों, अपेक्षाकृत अलग-थलग क्षेत्रों तथा अलग-थलग क्षेत्रों के संदर्भ में हो सकता है। आइए हम इस तरह के वर्गीकरण की योग्यता देखें।

भारतीय इतिहास में काफ़ी पहले ही कुछ क्षेत्र शक्ति के चिरस्थायी केन्द्र बन गए थे। इन क्षेत्रों में निरंतर शक्तिशाली राज्य बने रहे। इसके विपरीत, कुछ क्षेत्र इतने शक्तिशाली नहीं थे।

स्थायी केन्द्रीय क्षेत्र गंगा, गोदावरी, महानदी, कृष्णा तथा कावेरी जैसी मुख्य नदी घाटियों के क्षेत्र हैं और इन क्षेत्रों में मानवीय बस्तियां अधिकतर संख्या में पायी जाती रही हैं। संसाधनों की उपलब्धता तथा व्यापार एवं संचार के अभिसरण ने इन क्षेत्रों के महत्व को और भी बढ़ा दिया है। तर्कसंगत ही है कि ये क्षेत्र महत्वपूर्ण शक्ति-केन्द्रों के रूप में उभरे।

किंतु यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि किसी का महत्वपूर्ण केन्द्र होना इस बात पर निर्भर करता है कि ऐतिहासिक कारण उस क्षेत्र पर किस प्रकार अभिसारित होते हैं। मध्य भारत के अपेक्षाकृत अलग-थलग क्षेत्र, जैसे भीलों का देश, बस्तर एवं राजमहल की

पहाड़ियां बस्तियों की संरचना, कृषिगत इतिहास, सामाजिक संगठन तथा राज्य प्रणाली की दृष्टि से केन्द्रीय क्षेत्रों से भिन्न थे। चूंकि क्षेत्रों का विकास ऐतिहासिक रूप से हुआ अतः तीनों प्रकार के क्षेत्रों में अन्तर सदैव एक ही जैसा नहीं था। एक बिन्दु पर एक श्रेणी का दूसरी श्रेणी में परिवर्तित होना संभव था।

क्या भूगोल और पर्यावरण को किसी प्रमुख कारण के रूप में लिया जा सकता है? सभी प्राकृतिक क्षेत्र केवल संभावनाओं के क्षेत्र हैं और इन संभावनों को उनके तकनीकी स्तर पर मानव हस्तक्षेप के माध्यम से साकार किया जाता है। अतः इतिहास को भौगोलिक नियतत्ववाद के अर्थ में देखा नहीं जा सकता है।

अगर हम हड़प्पा सभ्यता को देखें तो हम पाते हैं कि पर्यावरण और सामाजिक व्यवस्था के बीच सक्रिय संपर्क था, जिसके कारण पारिस्थितिक पतन हुआ। भारतीय उपमहाद्वीप की पहली शहरी सभ्यता – हड़प्पा सभ्यता – उत्तर-पश्चिमी भाग में एक बहुत विस्तृत क्षेत्र में विकसित हुई। पुरातात्विक साक्ष्य इस समय के दौरान हल का व्यापक उपयोग दर्शाते हैं। उन्होंने गेंहू, जौ, पश्चिम ऐशियाई मूल की मसूर की फसलों के साथ चावल और दालों जैसी स्वदेशी वर्षा ऋतु की फसलें उगाना शुरू कर दिया था। इस प्रकार उत्पादित कृषि अधिशेष ने कई शहरों के उदय को संभव बनाया। अधिशेष ने सामग्री के प्रसंस्करण और विनिमय को बढ़ावा देने के साथ-साथ व्यापार और कारीगर गतिविधियों को बढ़ावा दिया। छोटे पैमाने पर वस्तु विनिमय के बनिस्पत लंबी दूरी के आदान-प्रदान ने अभिलेखों के रखरखाव को ज़रूरी बनाया और सिंधु घाटी की सभ्यता भारतीय इतिहास में साक्षरता का पहला सबूत बन गयी। इस सभ्यता के शहरी केन्द्रों के धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ने और गायब होने के लिए कई संभावित कारणों को जिम्मेदार ठहराया गया है। सरस्वती नदी का सूखना, सिंधु नदी में बाढ़, पुरावनस्पति विज्ञान के अनुसार जलवायु परिवर्तन, सिंचाई के कारण प्राकृतिक वनस्पति आवरण का ह्रास होना : इनमें से कुछ या सब ने मिलकर सिंधु सभ्यता का पतन किया।

विद्वान इस सभ्यता के पतन के मुख्य कारणों में से एक कारण–पारिस्थितिक असंतुलन– को महत्व दे रहे हैं। एक लंबे समय से निरंतर मानव और पशु उपयोग द्वारा परिदृश्य बिगड़ गया। निर्वाह आधार के घटने से सभ्यता की पूरी अर्थव्यवस्था पर दबाव पड़ा। यह शहरी योजना और लोगों के जीवन-स्तर में क्रमिक गिरावट से परिलक्षित होता है। धीरे-धीरे, हड़प्पा वासी प्रमुख क्षेत्रों से बेहतर निर्वाह की संभावनाओं वाले क्षेत्रों में चले गये।

बोध प्रश्न 1

1) भारत के तीन प्रमुख भूआकृतिक क्षेत्रों की चर्चा करें। हर एक पर पाँच पंक्तियां लिखें।

2) क्षेत्रों की प्रकृति पर एक लेख लिखें।

1.5 प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के स्रोत

स्रोत इतिहास लेखन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इनके आधार पर हम अपने अतीत का पुनर्निर्माण करते हैं। अतीत का कोई भी अवशेष स्रोत के उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है। प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए हमारे पास विभिन्न स्रोत हैं। मोटे तौर पर, उन्हें तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

- साहित्यिक,
- पुरातात्विक,
- विदेशी वृतान्त।

साहित्यिक स्रोतों के अंतर्गत वैदिक, बौद्ध और जैन साहित्य, महाकाव्य, *पुराण*, *संगम* साहित्य, प्राचीन जीवनियाँ, कविता और नाटक शामिल किए जा सकते हैं। पुरातत्व के अंतर्गत हम पुरातात्विक अन्वेषणों और उत्खनन के परिणामस्वरूप प्राप्त होने वाले पुरालेखों, मुद्राओं और स्थापत्य पुरातात्विक अवशेषों पर विचार कर सकते हैं। भारतीय इतिहास में लिखित अभिलेखों की प्रधानता है। हालाँकि, मंदिर के अवशेष, सिक्के, घर के अवशेष, खंभों के गड्डे (Post-Holes), मिट्टी के बर्तन, कोष्ठागार आदि के रूप में पुरावशेष भी साक्ष्यों की एक महत्वपूर्ण श्रेणी का गठन करते हैं। भारतीय इतिहास के तीनों काल – प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक – के लिए पुरातात्विक साक्ष्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। पुरातात्विक साक्ष्य उन अवधियों के लिए अपरिहार्य हैं जिनके पास कोई लेखन नहीं था; उदाहरण के लिए, भारतीय इतिहास का प्रागैतिहासिक और आद्य-ऐतिहासिक काल।

स्रोतों को प्राथमिक और द्वितीयक के रूप में भी विभाजित किया जा सकता है। पृथ्वी से बरामद सभी पुरातात्विक अवशेष या मंदिरों से प्राप्त अभिलेख और लिखित दस्तावेज़ों के रूप में *तालपत्र* (ताड़ के पत्ते की पांडुलिपियाँ); खंभों, चट्टानों, तांबे की तश्तरियों, मृदमाण्डों आदि पर जो शिलालेख हैं वे **प्राथमिक स्रोत** कहलाते हैं। इतिहासकारों द्वारा इनका उपयोग लेखों, किताबों या लिखित इतिहास के किसी भी रूप को लिखने के लिए किया जाता है जो बाद के शोधकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जाते हैं और इसलिए ये **द्वितीयक स्रोत** कहलाते हैं। लिखित प्राथमिक स्रोत दो प्रकार के होते हैं:

- पांडुलिपियों/शिलालेख
- प्रकाशित सामग्री

प्राचीन ग्रन्थों के लिखे जाने के पीछे क्या प्रयोजन था और वे किन श्रोतागण के लिए लिखे गये थे, इन सब का सावधानी से अध्ययन होना चाहिए। जब कोई ऐतिहासिक जानकारी के लिए प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अध्ययन कर रहा हो तब कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उपिंदर सिंह ने कहा है कि यदि एक विशेष अवधि में एक ग्रन्थ की रचना की गई है, तो ऐतिहासिक स्रोत के रूप में इसका उपयोग कम समस्यापूर्ण है। हालाँकि, यदि इसकी रचना लंबे समय तक चलती है, तो उसका काल निर्धारण करना अधिक जटिल हो जाता है। उदाहरण के लिए, महाकाव्यों में *महाभारत* को एक विशिष्ट समय के ग्रन्थ के रूप में देखना बहुत मुश्किल है। ऐसे मामलों में इतिहासकार को विभिन्न कालानुक्रमिक परतों का विश्लेषण करना पड़ता है और गंभीर रूप से विभिन्न परिवर्धनों और प्रक्षेपों को देखना होता है। किसी ग्रन्थ की भाषा, शैली और सामग्री का विश्लेषण करना आवश्यक है। *रामायण* और *महाभारत* दोनों महाकाव्यों के महत्वपूर्ण संस्करण बनाए गए हैं जहाँ इन ग्रंथों की विभिन्न पांडुलिपियों का विश्लेषण किया गया और उनके मूल को

पहचानने का प्रयास किया गया है। इस तरह के उपक्रमों ने इतिहासकारों की काफ़ी मदद की है।

प्राचीन भारतीय ग्रंथों का अध्ययन करते समय कुछ प्रश्नों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, उनकी रचना क्यों और किसके लिए की गई? उनका सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ क्या था? एक ग्रंथ एक आदर्श का प्रतिनिधित्व कर सकता है और उस समय जो हो रहा था उसका सटीक विवरण शायद नहीं हो सकता। एक साहित्यिक कृति कई भारतीय धार्मिक ग्रन्थों की तरह मिथकों से भरभूर हो सकती है, जो ऐतिहासिक जानकारी का स्रोत हो सकती है परन्तु उसका सावधानी के साथ अध्ययन किया जाना चाहिए।

1.5.1 साहित्यिक स्रोत

अधिकांश प्रारंभिक भारतीय साहित्य धर्म, बह्मांड विज्ञान, जादू, अनुष्ठान, प्रार्थनाओं और पौराणिक कथाओं से भरा हुआ है, इसलिए इन ग्रंथों के साथ काल-निर्धारण से जुड़ी समस्याएँ हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उनकी रचना और संकलन की अवधि में एक व्यापक अंतर होता है। वे ईश्वर मीमांसा जैसे विषय से संबंध रखते हैं इसलिए उन्हें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से समझना मुश्किल है। *वेद, उपनिषद, ब्राह्मण* साहित्य, *सूत्र, पुराण* आदि मोटे तौर पर धार्मिक विषयों से संबंधित हैं। हालाँकि इन सीमाओं के बावजूद ऐसे ग्रंथों को अतीत को समझने के लिए फलदायी रूप से इस्तेमाल किया गया है।

अब हम भारतीय इतिहास के स्रोतों के रूप में प्राचीन भारतीय साहित्य की इन विभिन्न श्रेणियों का अध्ययन करेंगे।

वेद

भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे पहला साहित्य वैदिक साहित्य है। *वेद* शब्द संस्कृत मूल के 'विद' शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'जानना'। *वेद* का अर्थ है ज्ञान। *वेद* मौखिक साहित्य में उत्कृष्ट हैं। उन्हें पारंपरिक रूप से श्रुति यानि 'सुना' या प्रकट ग्रंथों के रूप में माना जाता है। वैदिक साहित्य तीन रूप से वर्गीकृत हैः

क) ***संहिता* या संग्रह**, अर्थात् भजनों, प्रार्थनाओं, विसंगतियों, द्वंद्ववाद, बलिदान के सूत्र और वाद-विवाद। निम्नलिखित चार वैदिक संहिताएँ हमें ज्ञात हैंः

ऋग्वेद संहिताः *ऋग्वेद* का संग्रह। यह प्रशंसा (***ऋक***) के गीतों का ज्ञान है।

अथर्ववेद संहिताः *अर्थववेद* का संग्रह अथवा जादुई सूत्रों का ज्ञान (*अथर्वन्*)।

सामवेद संहिताः *सामवेद* का संग्रह, अर्थात् गीतों या धुनों (*समन्*) का ज्ञान।

यजुर्वेद संहिताः *यजुर्वेद* का संग्रह पूजा-अनुष्ठानों के लिए यज्ञीय सूत्रों (*यजु*) का संकलन है।

ख) ***ब्राह्मणः*** ये विस्तृत गद्य ग्रंथ हैं जिनमें धार्मिक विषय होते हैं, विशेष रूप से बलिदान पर टिप्पणियां और बलिदान संस्कार व समारोहों का व्यावहारिक या रहस्यमयी महत्व।

ग) ***आरण्यक* (वन ग्रन्थ) और उपनिषद (गुप्त सिद्धांत)** : इनमें भगवान, संसार, मानव जाति इत्यादि पर वन तपस्वियों व संन्यासियों के मतों और कथनों का विवरण है। इनमें प्राचीनतम् दर्शनशास्त्र का अच्छा खासा समावेश है।

संपूर्ण वैदिक साहित्य को ईश्वर द्वारा प्रकट किया गया माना जाता है और इसलिए इसे पवित्र माना जाता है। कालक्रम में यह हजार वर्षों तक फैला है, कुछ हिस्से पहले की अवधि

और कुछ बाद की अवधि के हैं। *ऋग्वेद* भारत का सबसे पुराना ग्रंथ है। इसमें 10 पुस्तकें अथवा मंडल हैं। *ऋग्वेद* की पुस्तकें II-VII सबसे प्राचीन हैं और इन्हें पारिवारिक पुस्तकें भी कहा जाता है क्योंकि प्रत्येक को ऋषियों के एक विशेष परिवार द्वारा परंपरा के अनुसार रचित किया गया। जब हम प्रारंभिक वैदिक साहित्य का उल्लेख करते हैं तो हम अनिवार्य रूप से *ऋग्वेद* की पुस्तकों II-VII का उल्लेख करते हैं। माना जाता है कि 1500-1000 बी.सी.ई. में इसकी रचना की गई थी। उत्तर वैदिक साहित्य में *ऋग्वेद* की पुस्तकें I, VIII, IX और X शामिल हैं; इनके साथ शामिल हैं : *सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, अरण्यक* और *उपनिषद*। ये लगभग 1000-500 बी.सी.ई. के बीच रचे गए थे।

हालाँकि अधिकांश वैदिक साहित्य में गीत, प्रार्थना, धर्मशास्त्रीय और धार्मिक मामले शामिल हैं, लेकिन इनका उपयोग इतिहासकारों ने राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक सामग्री को इकट्ठा करने के लिए किया है। *ऋग्वेद* में एक पशुपालन, पूर्व-वर्ग समाज से उत्तर-वैदिक काल के कृषक, वर्गीकृत जाति-समाज की ओर संक्रमण व राजनीतिक क्षेत्रों के निर्माण जैसी प्रक्रियाओं की जानकारी प्राप्त हुई है।

ग्रंथों की एक श्रेणी और है – *सूत्र*। यह वैदिक साहित्य के बाद का हिस्सा है। इन्हें "सुने" (श्रुति) ग्रंथों के बजाय संस्मरण अथवा "स्मृति" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ये महान ऋषियों द्वारा रचे गए थे। हालाँकि ये अपने आप में आधिकारिक माने जाते हैं। सूत्र ग्रंथ (लगभग 600-300 बी.सी.ई.) कर्मकांड पर आधारित हैं।

इसमें शामिल हैः

- **श्रौतसूत्र** : इनमें महान बलिदानों को संपन्न करने के नियम हैं।
- **गृह्यसूत्र** : इनमें दैनिक जीवन के सरल समारोहों और बलिदानों के लिए दिशा-निर्देश शामिल हैं।
- **धर्मसूत्र** : ये आध्यात्मिक और ग़ैर-धार्मिक कानून के निर्देशों की पुस्तकें हैं। ये सबसे पुरानी कानून पुस्तकें हैं।

सूत्रोत्तर ग्रंथ *स्मृति* ग्रंथ है जो *मनुस्मृति, नारद स्मृति* और *याज्ञवल्क्य स्मृति* हैं। ये लगभग 200 बी.सी.ई. और 900 सी.ई. के बीच रचे गए थे। ये विभिन्न वर्णों के साथ-साथ राजाओं और उनके अधिकारियों के कर्तव्यों के बारे में उल्लेख करते हैं। इसमें शादी और संपत्ति के लिए नियम तय किए गये हैं। इसमें चोरी, हमला, हत्या, व्यभिचार आदि के लिए व्यक्तियों को दंड का भी विधान है।

प्रारंभिक भारत में मौखिक और लिखित परंपरा

प्रारंभिक भारतीय इतिहास का एक बड़ा हिस्सा मौखिक परंपरा से संबंधित है। *वेदों* को पारंपरिक रूप से श्रुति यानि सुना या 'प्रकट' ग्रन्थों के रूप में माना जाता है। कहा जाता है कि ये शब्द भगवान ब्रह्मा द्वारा प्रथम मनुष्य के कान में कहे गए थे। उन्हें स्मरण किया जाता था और इस तरह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंप दिया गया। लोतिका वरदराजन के अनुसार पवित्र ग्रन्थों के संस्मरण की प्रक्रिया ने कर्मकांडों को बिगड़ने व भ्रष्ट होने से रोक दिया। यह संभव नहीं होता यदि ये लिखित शब्द के माध्यम से प्रेषित होते। ज्ञान पवित्र और संकृत था और केवल योग्य छात्र को प्रेषित किया जाना था।

भारत में शहरीकरण के उदय के साथ साक्षरता का आगमन जुड़ा हुआ है। व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि के साथ लिपि का प्रयोग आरंभ हुआ। प्रतिज्ञा पत्र, ऋण पत्र,

उत्पादित वस्तुओं और आदान-प्रदान के लेखे-जोखे और यहाँ तक की सूदखोरी का उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है। शिलालेख साक्षरता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति थी। अशोक के शिलालेखों में तीसरी शताब्दी बी.सी.ई. में ब्राह्मी लिपि का उपयोग किया गया था, जो ब्राह्मी के उपयोग का सबसे पहला प्रमाण है। रोमिला थापर टिप्पणी करती हैं कि भारतीय संस्कृति के बारे में जो सच है वह यह था कि मौखिक और लिखित परंपरायें सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में घनिष्ठ रूप से जुड़े हुयी थी। मौखिक परंपरा पर लिखित परंपरा थोपी नहीं गई थी, इस प्रकार इसे एक गैर विशेषता बनने से रोका जा सका।

कौटिल्य का *अर्थशास्त्र*

यह अर्थव्यवस्था और राज्य-व्यवस्था पर एक महत्वपूर्ण कानूनी ग्रन्थ है। इसको 15 पुस्तकों में विभाजित किया गया है, जिनमें से पुस्तकें II और III को आरम्भिक माना जा सकता है और लगता है कि यह अलग-अलग हाथों की कृतियाँ हैं। सी.ई. की आरंभिक शताब्दियों में इसे अंतिम रूप दिया गया। हालाँकि, शुरुआती भाग मौर्य काल की स्थिति और समाज को दर्शाते हैं। यह प्रारंभिक भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए समृद्ध सामग्री प्रदान करता है।

महाकाव्य

दो महान महाकाव्य – *रामायण* और *महाभारत* (लगभग 500 बी.सी.ई. - 500 सी.ई.) को भी एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। वे "इतिहास" ("इस प्रकार से") या *आख्यान* के रूप में जाने जाते हैं। व्यास लिखित *महाभारत* पुराना है और संभवतः लगभग दसवीं-चौथी शताब्दी बी.सी.ई. की स्थिति को दर्शाता है। इसकी मुख्य कथा जो कौरव-पांडव संघर्ष है, उत्तर-वैदिक काल से संबंधित हो सकती है। इसका वर्णनात्मक भाग वैदिकोत्तर काल का हो सकता है और उपदेशात्मक अंश आमतौर पर मौर्य और गुप्त काल से संबंधित है (आर. एस. शर्मा, 2005)।

यह माना जाता है कि इनमें लगातार प्रक्षेप बने हैं। चूँकि दोनों महाकाव्यों में कुछ भाग बाद में जोड़े गए, इसलिए इतिहासकारों को इस सामग्री की पाठन क्रिया में सावधानी बरतनी चाहिए और उनकी विभिन्न कालानुक्रमिक परतों को ध्यान में रखना चाहिए।

वाल्मीकि की *रामायण महाभारत* की तुलना में अधिक एकीकृत प्रतीत होती है। दोनों महाकाव्यों में वर्णित कुछ स्थलों की खुदाई की गई है। अयोध्या की खुदाई से उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड की अवधि तक बस्तियों का पता चला है। हस्तिनापुर, कुरुक्षेत्र, पानीपत, बागपत, मथुरा, तिलपत और बैराट में खुदाई की गई है और ये स्थल चित्रित धूसर मृदभांड अवधि के समय के हैं। दोनों महाकाव्यों में धार्मिक संप्रदायों के बारे में जानकारी है, जिन्हें हिंदू धर्म की मुख्यधारा, सामाजिक प्रथाओं और तात्कालिक समय के दर्शन में एकीकृत किया गया।

पुराण

पुराण व्यास द्वारा लिखित हिंदू ग्रंथों की एक श्रेणी है। 18 महापुराण और कई उपपुराण (पुराणों के पूरक या परिशिष्ट) हैं। प्रमुख *पुराणों* का संकलन 400 सी. ई. तक पूरा हो गया था। उनकी विश्वव्यापी सामग्री इंगित करती है कि ये विभिन्न विषयों को शामिल करते हैं और विभिन्न हाथों द्वारा रचित है।

निम्नलिखित पांच शाखाओं को *पुराणों* के विषय-वस्तु के रूप में माना जाता है:

- *सर्ग* (विश्व के निर्माण),
- *प्रतिसर्ग* (ब्रह्मांड का पुनः निर्माण),
- *मन्वतर* (विभिन्न मानवों का काल/मनु का काल),
- *वंश* (देवताओं, राजाओं और संतों की वंशावली सूची), और
- *वंशानुचरित* (शाही राजवंशों का वृत्तांत/कुछ चुने हुए पात्रों की जीवन कथाएँ)।

प्रमुख पुराणों जैसे *वायु, ब्रह्मांड, ब्रह्मा, हरिवंश, मत्स्य, विष्णु* में ज़रूरी जानकारी है जिसे इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को समझने के लिए इस्तेमाल किया है। *पुराणों* में प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उपयोगी जानकारी है। वे राजवंशों के राजनीतिक इतिहास और वंशावली पर प्रकाश डालते हैं। हालांकि वह कालीयुग के बाद की वंशावली है जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है। प्राचीन राजवंशों पर *पुराणों* में बहुत कुछ है जैसे हर्यक, शिशुनाग, नंद, मौर्य, शुंग, कण्व और आंध्र। कुछ राजाओं के नाम के अंत में 'नाग' शब्द प्रत्यय के रूप में जुड़ा हुआ है जो उत्तर व मध्य भारत पर राज कर रहे थे। दिलचस्प बात यह है कि हम किसी अन्य स्रोत से इन राजाओं के बारे में नहीं जानते हैं। *पुराणों* में गुप्त राजाओं के साथ वंश सूची समाप्त होती है। यह दर्शाता है कि *पुराणों* को लगभग चौथी-छठी शताब्दी सी.ई. के दौरान संकलित किया गया। हालाँकि, कुछ ऐसे हैं जो बाद में रचे गए, जैसे कि *भागवत पुराण* (लगभग 10वीं शताब्दी) और *स्कंद पुराण* (लगभग 14वीं शताब्दी)।

पुराण नदियों, झीलों, पहाड़ों आदि पर भौगोलिक जानकारी प्रदान करने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, वे प्राचीन भारत के ऐतिहासिक भूगोल के पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा, वे हिंदू धर्म के तीन प्रमुख संप्रदायोंः वैष्णववाद, शैववाद और शक्तिवाद के बारे में जानकारी का एक अच्छे स्रोत हैं। विभिन्न प्रक्रियाओं जैसे विभिन्न पंथ प्रमुख धार्मिक परंपराओं के भीतर कैसे एकीकृत हो गए और गणपति, कृष्ण, ब्रह्मा, कार्तिकेय आदि जैसे छोटे पंथ कैसे उभरे, यह भी उनसे जाना जा सकता है। इन पंथों को ब्राह्मणों ने अपने सामाजिक और धार्मिक मूल्यों का प्रसार हेतु वाहन के रूप में प्रयोग किया।

संगम साहित्य

सबसे शुरुआती तमिल ग्रंथ *संगम* साहित्य (लगभग 400 बी.सी.ई. - 200 सी.ई. के बीच) संकलित किए गए। यह उन कवियों का संकलन है, जिन्होंने तीन से चार शताब्दियों की अवधि में छोटी और लंबी कविताओं की रचना की, जो प्रमुखों और राजाओं द्वारा संरचित हैं। इनका संग्रह गोष्ठियों में हुआ जिन्हें *संगम* कहा जाता था और इसमें उत्पादित साहित्य को *संगम* साहित्य कहा जाने लगा। तीन *संगम* (साहित्यिक सम्मेलन) हुए – पहला और अंतिम सम्मलेन मदुरै में, दूसरा सम्मलेन कपाटपुरम में हुआ था। हालाँकि, इन समारोहों की ऐतिहासिकता के बारे में कुछ संदेह है, इसलिए, कुछ विद्वान *संगम* साहित्य (उपिंदर सिंह, 2008) के बजाय "प्रारंभिक शास्त्रीय तमिल साहित्य" शब्द का उपयोग करना पसंद करते हैं।

कविताओं में लगभग 30,000 पंक्तियाँ प्रेम और युद्ध के विषयों पर हैं। वे प्राचीन काल के भाटों के गीतों पर आधारित थे और संकलित होने से पहले लंबे समय तक मौखिक रूप से प्रसारित हुए हैं। वे धार्मिक साहित्य के रूप में संकलित नहीं थे। इनके कवि शिक्षकों, व्यापारियों, बढ़ई, सुनार, लोहार, सैनिक, मंत्री और राजा आदि सभी वर्गों से थे। लेखकों के विविध विषयों के कारण वे अपने समय के लोगों के रोजमर्रा के जीवन की जानकारी की खान हैं। वे उच्चतम गुणवत्ता के साहित्य का प्रतिनिधि करते हैं (उपिंदर सिंह, 2008)।

कई कविताओं में एक राजा या नायक का नाम आता है और उसके सैन्य कारनामों का विस्तार से वर्णन मिलता है। उनके द्वारा भाटों और योद्धाओं को दिए गए उपहारों का वर्णन मिलता है। ऐसा भी हो सकता है, शाही दरबार में इन कविताओं का गान किया गया हो। इसलिए यह संभव है कि राजाओं के नाम वास्तविक ऐतिहासिक आंकड़ों का उल्लेख करते हैं। चोल राजाओं का उल्लेख दाता के रूप में किया गया है।

संगम साहित्य में कावेरीपट्टिनम जैसे कई समृद्ध शहरों का उल्लेख है। वे अपने जहाजों में आने वाले यवनों, सोने के लिए काली मिर्च खरीदने और स्थानीय लोगों को शराब और महिला दासों की आपूर्ति करने की बात करते हैं (आर.एस. शर्मा, 2005)। व्यापार पर *संगम* साहित्य द्वारा उत्पादित जानकारी की पुरातत्व और विदेशियों के वृत्तांत द्वारा पुष्टि की गयी है।

जीवन-वृत्तांत, कविता और नाटक

प्रारंभिक भारत नाटक और कविता की कई कृतियों का भंडार है। इतिहासकारों ने उस काल के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया है, जिस समय उनकी रचना की गई थी। सबसे पहले संस्कृत के कवियों और नाटककारों में अश्वघोष और भाष शामिल हैं। अश्वघोष ने *बुद्धचरित, सारिपुत्रकृष्ण* और *सौन्दरानंद* को लिखा। भास एक नाटककार थे और उन्होंने *पंचरात्र, दत्तवाक्य, बालचरित* और *स्वप्न-वासवदत्ता* लिखा। महान संस्कृत लेखक-कवि कालिदास (लगभग चौथी-पांचवीं शताब्दी सी.ई.) *ने अभिज्ञानशाकुंतलम्, मालविकाग्निमित्रम्, विक्रमोर्वषीयम्* और *रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्* और *मेघदूतम्* जैसे काव्य कृतियों को लिखा। वे गुप्त वंश के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं। *मालविकाग्निमित्रम्* पुष्यमित्र शुंग के शासनकाल की घटनाओं पर आधारित है (शुंग वंश मौर्यों के बाद था)।

तत्पश्चात, ऐतिहासिक विषयों पर प्राचीन नाटक हैं। उल्लेख विशाखदत्त के *मुद्राराक्षस* (लगभग 7वीं - 8वीं शताब्दी सी.ई.) का किया जा सकता है। यह नाटक इस बात पर आधारित है कि चाणक्य चंद्रगुप्त मौर्य की ओर से नंदों के मंत्री राक्षस पर कैसे विजय प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। उनके अन्य नाटक *देवीचंद्रगुप्तम्* गुप्त राजा, रामगुप्त के शासनकाल की एक घटना पर केंद्रित है। कथा साहित्य में *पंचतंत्र* (लगभग 5वीं -6वीं शताब्दी सी.ई.) और *कथासरित्सागर* (कहानियों का महासागर) शामिल हैं। वे लोकप्रिय लोक कथाओं के संग्रह हैं।

प्रसिद्ध राजाओं की जीवनियाँ साहित्य का एक दिलचस्प हिस्सा हैं। इन्हें दरबारी-कवियों और लेखकों ने अपने शाही संरक्षकों की प्रशंसा में लिखा था। बाणभट्ट का *हर्षचरित* (लगभग 7वीं शताब्दी सी.ई.) पुष्यभूति राजवंश के हर्षवर्धन के बारे में प्रशस्तिपरक शब्दों में बात करता है। यह भारत में सबसे पुरानी संरक्षित जीवनी है। बाण के अनुसार यह एक अध्यायिका है। यह इतिहास परंपरा से संबंधित ग्रंथों की एक शैली है। यह राजा के बारे में बहुत कुछ बताता है लेकिन साथ ही सिंहासन के लिए संघर्षरत होने का संकेत देता है। बिल्हण का *विक्रमांकदेवचरित्* (लगभग 12वीं सदी) बाद के चालुक्य राजा विक्रमादित्य VI के बारे में है और उनकी जीत का वर्णन करता है।

बौद्ध और जैन साहित्य

प्रारंभिक भारत के गैर-ब्राह्मणवादी और गैर-संस्कृत स्रोतों में बौद्ध और जैन साहित्य एक महत्वपूर्ण श्रेणी है। यह क्रमशः पालि और प्राकृत भाषाओं में लिखा गया था। बुद्ध की मृत्यु के बाद रचित पाली ग्रंथ *त्रिपिटक* ("तीन टोकरी") हमें बुद्ध और 16 *महाजनपदों* के समय

के भारत के बारे में बताते हैं। *त्रिपिटक* पालि में बौद्ध विहित साहित्य और उनकी टिप्पणियों के लिए दिया जाने वाला सामान्य नाम है। *त्रिपिटक* पालि, जापानी, चीनी और तिब्बती संस्करणों में जीवित हैं। उनमें तीन किताबें शामिल हैं :

- *सुत्त पिटक,*
- *विनय पिटक,* और
- *अभिधम्म पिटक*।

सुत्त पिटक में कहानियों, कविताओं और संवाद के रूप में विभिन्न सिद्धांतों पर बुद्ध के प्रवचन शामिल हैं। *विनय पिटक* भिक्षुओं के लिए 227 नियमों और विनियमों के बारे में है। इसमें बुद्ध द्वारा प्रत्येक नियम की स्थापना के बारे में स्पष्टीकरण शामिल हैं। इसमें उनके जीवन, घटनाओं और बौद्ध धर्म की कहानी के बारे में जानकारी शामिल है। यह 386 बी.सी.ई. में लिखा गया था।

अभिधम्म पिटक (शाब्दिक रूप से "उच्च धम्म") में थेरवाद के अनुसार बौद्ध दर्शन से संबंधित विषय हैं और इसमें सूचियाँ, सारांश और प्रश्न शामिल हैं। *सुत्त पिटक* में पाँच *निकाय* शामिल हैं जिनमें से *खुद्दक निकाय* प्रवचनों का एक संग्रह है। इसमें *थेरगाथा, थेरीगाथा* और *जातक* शामिल हैं जो एक इतिहासकार के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं। *जातक* में लगभग 550 से अधिक कहानियाँ देव, मनुष्य, पशु, परी, आत्मा या एक पौराणिक चरित्र के रूप में बुद्ध के पूर्व जन्मों के बारे में हैं। कई कहानियों और रूपांकनों को पूर्व-बौद्ध और गैर-बौद्ध मौखिक परंपराओं से लिया गया था। उनकी लोकप्रियता के कारण वे भारहुत, सांची, नागार्जुनाकोंडा और अमरावती में मूर्तिकला में चिन्हित है। वे महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे बौद्ध धर्म और लोकप्रिय बौद्ध धर्म के इतिहास की एक झलक प्रदान करते हैं।

थेरगाथा ("ज्येष्ठ बौद्ध भिक्षुओं की कविताएँ") और *थेरीगाथा* ("ज्येष्ठ बौद्ध भिक्षुणियों की कविताएँ") कविता का एक संग्रह है, जिसे छंद के रूप में बौद्ध भिक्षुओं के शुरुआती सदस्यों ने सुनाए थे। *थेरीगाथा* भारत की पहली संरक्षित कविता संग्रह है जिसे महिलाओं द्वारा रचा गया है। इसलिए, यह न केवल बौद्ध धर्म के लिए बल्कि लिंग अध्ययन के लिए भी महत्वपूर्ण है। *थेरीगाथा* की गाथाएँ इस दृष्टिकोण का पुरज़ोर समर्थन करती हैं कि महिलाएँ आध्यात्मिक प्राप्ति के मामले में पुरुषों के बराबर हैं।

गैर-विहित बौद्ध साहित्य में प्रथम शताब्दी बी.सी.ई.– प्रथम शताब्दी सी. ई. के आसपास *मिलिंदपन्हो* ("मिलिंद के प्रश्न") शामिल हैं। इसमें इंडो-ग्रीक राजा मिनैंडर और एक बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच संवाद शामिल है। सिंहली इतिहास *महावंश* ("महान इतिहास") और *दीपवंश* ("द्वीप का इतिहास") बुद्ध के ज्ञानोदय के समय से तीसरी शताब्दी बी. सी. ई. तक भारत में और चौथी शताब्दी सी. ई. तक श्रीलंका में विभिन्न पहलुओं पर जानकारी देते हैं।

जैन साहित्य में ग्रंथों की एक अन्य महत्वपूर्ण श्रेणी का गठन किया गया है जो प्राकृत का एक रूप, अर्धमगधी में है। इसमें ऐसी जानकारी है जो प्राचीन भारत के विभिन्न क्षेत्रों के इतिहास के पुनर्निर्माण में हमारी मदद करती है। दिगंबरों का साहित्य जैन शौरसेनी में है जबकि श्वेतांबर साहित्य अर्धमगधी की दो उपभाषाओं में है। महावीर द्वारा शिष्यों को दिए गए उपदेश पहली बार 14 *पूर्वों* में संकलित किए गए। स्थूलभद्र ने चौथी शताब्दी बी. सी. ई. में पाटलिपुत्र में एक महान परिषद का गठन किया और 12 *अंगों* में जैन साहित्य का पुनर्निर्माण किया। बाद में लगभग 5वीं शताब्दी सी.ई. में वल्लभी में हुए एक परिषद में मौजूदा ग्रंथों को औपचारिक रूप दिया गया और उन्हें लिखित रूप में प्रस्तुत किया गया।

श्वेतांबर द्वारा स्वीकार किए गए शास्त्र हैं:

i) 12 *अंग,*

ii) 12 *उपांग,*

iii) 10 *प्रकर्ण,*

iv) 6 *चेदसूत्र,*

v) 2 *सूत्र,* और

vi) 4 *मूलसूत्र*।

ये आचार संहिता, विभिन्न किंवदंतियों, जैन सिद्धांतों और तत्वमीमांसा के बारे में बताते हैं। दिगंबरों का मानना है कि अधिकांश मूल *पूर्व* खो गए हैं। इसलिए, वे श्वेतांबर द्वारा स्वीकार किए गए शास्त्रों को स्वीकार नहीं करते हैं। वे महान आचार्यों द्वारा लिखित धर्मग्रंथों का उपयोग करते हैं, जो महावीर की मूल शिक्षाओं पर आधारित हैं। जैन धर्म के इतिहास और सिद्धांत की जानकारी के लिए हम जैन साहित्य का उपयोग कर सकते हैं। प्रतिद्वंद्वी पंथ के सिद्धांत, जैन संघ में रहने वाले संतों की जीवन गाथा और जैन भिक्षुओं के जीवन के बारे में जान सकते हैं।

ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट है कि ज्यादातर प्राचीन भारतीय साहित्य धार्मिक है। इसलिए कुछ विद्वानों ने दावा किया है कि प्राचीन भारतीयों के पास इतिहास की भावना ही नहीं थी। शुरुआती पश्चिमी विद्वानों को कालक्रम, साक्ष्य, एक साफ-सुधरी कथा और और भारतीय ग्रन्थों में तारीखों की तलाश थी। इसके बजाय उन्हें जो मिला वह दंतकथाएँ, अनुष्ठान, प्रार्थना आदि थे। हालांकि, भारत की ऐतिहासिक परंपराओं के हालिया शोध ने यह स्पष्ट किया है कि विभिन्न समाज अलग-अलग तरीकों से ऐतिहासिक चेतना को एकीकृत करते हैं। इसके विभिन्न कारण हो सकते हैं। इतिहासकार रोमिला थापर एक ऐसी ही परंपरा का जिक्र करती है जिसे *इतिहास-पुराण* परंपरा कहा जाता है। वह नोट करती है कि कुछ समाज विशेष रूप से अपने अतीत को अभिलिखित करते हैं। ऐसा ही एक रूप चेतना का एक अंतर्निहित रूप है जिसे ग्रन्थों से बाहर निकालना पड़ता है। इनमें मूल मिथक, प्राचीन वंश समूहों के नायकों या वंशावली की प्रशंसा में रचनाएं शामिल है। कुछ अन्य ग्रन्थों में इतिहास का अधिक बाह्य रूप है, जैसे शासकों की जीवनी जिसे एक पहचानने योग्य रूप में लिखा गया है।

1.5.2 पुरातत्व

पुरातत्व के द्वारा अतीत को समझने के लिए भौतिक सामग्री का अध्ययन किया जाता है। इसका इतिहास से घनिष्ठ संबंध है। मूर्तियाँ, मिट्टी के बर्तनों, हड्डियों के टुकड़े, घर के अवशेष, मंदिर के अवशेष, अनाज, सिक्के, मुहरें, शिलालेख आदि वे अवशेष हैं जो पुरातत्व विज्ञान की विषय-वस्तु के रूप में हमारे सामने हैं।

यह पुरातात्विक साक्ष्य है जिससे हम प्रागैतिहासिक काल का अध्ययन करने में सक्षम हैं। भारत में भी पुरातत्व के आधार पर आद्य-ऐतिहासिक काल का पुनर्निर्माण किया गया है। हालाँकि, हम पुरातत्व की उपयोगिता को केवल इन अवधियों तक सीमित नहीं कर सकते हैं; यह उन अवधियों के लिए भी महत्वपूर्ण है जिनके लिखित प्रमाण हैं और जो इतिहास के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। उदाहरण के लिए, इंडो-ग्रीक के इतिहास को सिक्कों के आधार पर ही समझा गया है।

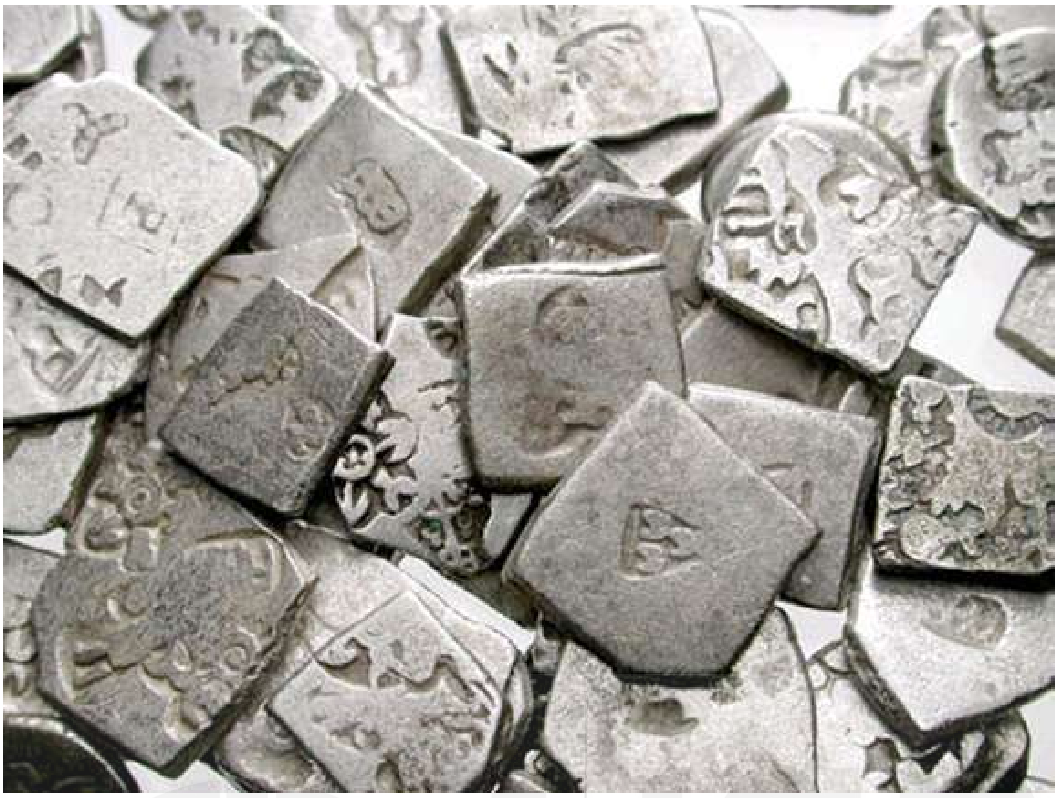

मौर्य आहत सिक्कों का भंडार। सीएनजी सिक्के.। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स। (https://en.wikipedia.org/wiki/File:Hoard_of_mostly_Mauryan_coins.jpg).

उत्खनन और अन्वेषण जैसे पुरातात्विक तरीके महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये व्यापार, राज्य, अर्थव्यवस्था, सामाजिक पहलुओं, धर्म और इस तरह के सांसारिक पहलुओं पर महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करते हैं जैसे कि लोग कैसे रहते, खाते और कपड़े पहनते थे। उत्खनन से पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण, ताम्र पाषाण, लौह युग, महापाषाण और कई अन्य संस्कृतियों पर भारी मात्रा में दत्त सामग्री प्राप्त होती है। चूँकि हड़प्पा लिपि अभी भी

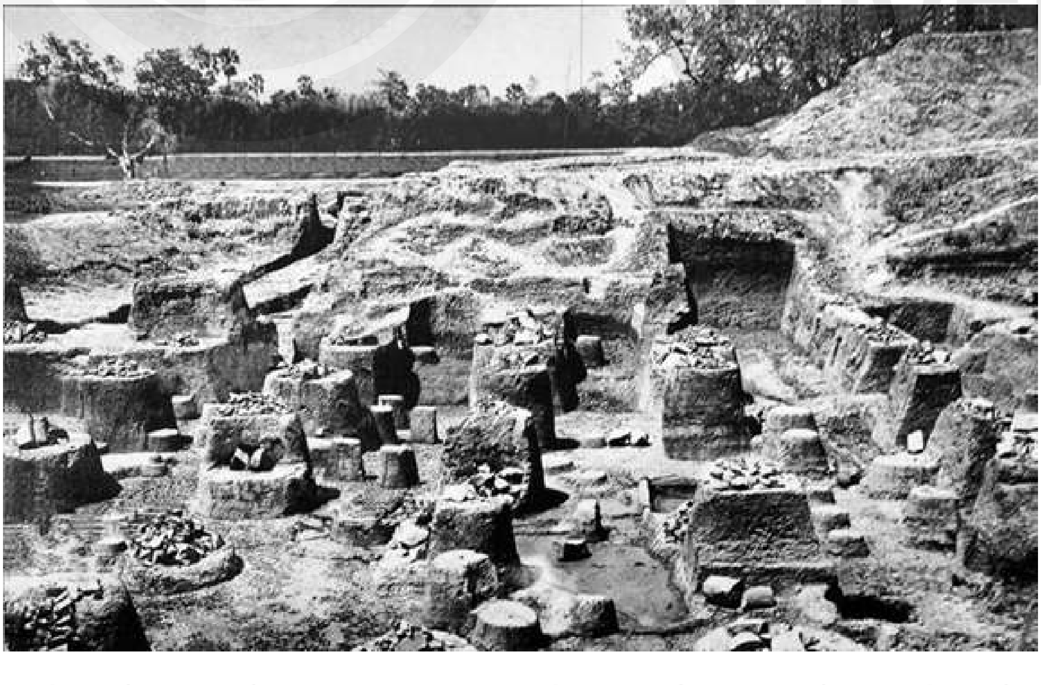

पाटलिपुत्र में कुम्रहार से उत्खन्न द्वारा अनावृत स्तम्भित कक्ष के खंडहर। स्रोत : पाटलिपुत्र में 1912-13 का ए एस आई ई सी द्वारा पुरातात्विक उत्खन्न स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स। (https://en.wikipedia.org/wiki/Kumhrar#/media/File:Mauryan_ruins_of_pillared_ hall_at_ Kumrahar_site_of_Pataliputra_ASIEC_1912-13.jpg).

अनिर्धारित है, इसलिए इस अवधि की जानकारी पूरी तरह से पुरातत्व से प्राप्त की गई है। यह हमें उत्पत्ति, प्रसार, अधिवास के प्रतिरूप, शहरीकरण, व्यापार, राजनीति, अर्थव्यवस्था, कृषि, शिकार, फसलों, कृषि उपकरणों, प्रौद्योगिकी, मनकों, मुहरों, अग्नि वेदियों, धर्म और इस सभ्यता के ह्रास के बारे में बताता है।

सिक्के

सिक्के उत्खनन में या मुद्रा भंडार के रूप में पाए जाते हैं। सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र** कहा जाता है। सिक्का एक धातु मुद्रा है और इसका एक निश्चित आकार, और वजन मानक है। इस पर जारी करने वाले प्राधिकरण की मुहर भी मिल सकती है। उस सतह पर जहाँ संदेश लिखा जाता है उसे अग्र भाग और विपरीत पक्ष को उल्टा भाग (reverse) कहा जाता है। प्रारंभिक भारतीय इतिहास में 'दूसरा शहरीकरण' (लगभग छठी शताब्दी बी.सी.ई.) पहला उदाहरण है, जहाँ हमें सिक्के के साहित्यिक और पुरातात्विक दोनों प्रमाण मिलते हैं। यह राज्यों के उदय, कस्बों और शहरों के विकास और कृषि और व्यापार के प्रसार का समय था। प्रारंभिक भारत में सिक्के तांबे, चांदी, सोने और सीसे से बनते थे। पकी मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे, जो कुषाण काल (पहली तीन शताब्दियों सी.ई.) से संबंधित हैं, सैकड़ों में पाए गए हैं। वे इस समय के समृद्ध वाणिज्य को दर्शाते हैं। प्रमुख राजवंशों से संबंधित अधिकांश सिक्कों को सूचीबद्ध और प्रकाशित किया गया है। उपमहाद्वीप में सबसे पुराने सिक्के आहत सिक्के हैं। ये ज्यादातर चांदी के और कभी-कभी तांबे के होते हैं। मगध साम्राज्य के विस्तार के साथ मगध के आहत सिक्कों को प्रतिस्थापित किया गया जो अन्य राज्यों द्वारा जारी किए गए थे।

हालाँकि सबसे पुराने सिक्कों में केवल चिन्ह थे जो बाद में राजाओं, देवताओं के साथ उनकी तिथियों और नामों का भी उल्लेख करते थे। उदाहरण के लिए, पश्चिमी क्षत्रप के सिक्कों पर शक काल की तिथियाँ मिलती हैं। सिक्कों के प्रचलन ने हमें कई सत्तारूढ़ राजवंशों के इतिहास का पुनर्निर्माण करने में सक्षम बनाया है। सिक्के राजनीतिक संगठन पर बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते हैं। मिसाल के तौर पर, यौधेय और मालव के सिक्के 'गण' की विरासत को आगे ले जाते हैं, जो हमें उनके गैर-राजतंत्रीय स्वरूप के बारे में बताता है। दक्कन के सातवाहन सिक्कों पर एक जहाज की छवि समुद्री व्यापार के महत्व की गवाही देती है।

मौर्योत्तर काल में सिक्के सीसा, पोटिन, तांबा, कांस्य, चांदी और सोने के बने थे। इन्हें बड़ी तादाद में जारी किया गया जिससे हमें उस काल के दौरान व्यापार की बढ़ती मात्रा की जानकारी मिलती है। गुप्त राजाओं ने भी कई सोने के सिक्के जारी किये। इन्हें दिनार के रूप में जाना जाता है। ये बहुत कुशलता से बनाये गये है और ठप्पे द्वारा निर्मित है। राजगद्दी पर बैठे राजाओं की विभिन्न मुद्राओं को दर्शाया गया हैः राजाओं को शेर या गैंडे का शिकार करते, धनुष या युद्ध-कुल्हाड़ी पकड़ते, संगीत वाद्य बजाते या अश्वमेध यज्ञ करते जैसी गतिविधियों के साथ दर्शाया गया है। समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त के सिक्के पर उन्हें वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

गुप्तोत्तर काल में सोने के सिक्कों की संख्याओं और शुद्धता में गिरावट आ गई थी। यह तथ्य आर.एस.शर्मा की सामंतवाद पर आधारित अत्यधिक विवादास्पद धारणा का आधार बनी है। उनके अनुसार सिक्कों में खोट और कौड़ियों का बढ़ता उपयोग इस काल के व्यापार और वाणिज्य की गिरावट की ओर संकेत करता है।

रानी कुमारदेवी और राजा चंद्रगुप्त प्रथम की एक गुप्त कालीन स्वर्ण मुद्रा। स्रोत : विकिमीडिया कॉमन्स।(https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Queen_Kumaradevi_and_King_Chandragupta_I_on_a_coin.jpg).

शिलालेख

शिलालेखों के अध्ययन को **पुरालेखशास्त्र** कहा जाता है। शिलालेख मुहरों, तांबे की प्लेटों, मंदिर की दीवारों, लकड़ी के टुकड़ों, पत्थर के खंभों, चट्टान की सतहों, ईंटों या चित्रों पर उकेरे गए हैं। प्राचीनतम शिलालेखों पर अंकित लिपि लगभग 2500 बी.सी.ई. की हड़प्पा लिपि है, जो अभी तक पढ़ी नहीं गई है। सर्वप्रथम अशोक के शिलालेख पढ़े गए। ये शिलालेख पूरे उपमहाद्वीप में चट्टान की सतह और पत्थर के स्तंभों पर पाए गए हैं। अशोक के शिलालेखों को पढ़ने का श्रेय 1837 में जेम्स प्रिंसेप को जाता है। वे बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी में एक सिविल सेवक थे। अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी व खरोष्ठी लिपि में हैं।

अशोक के शिलालेखों की लिपि काफ़ी विकसित है। यह माना जाता है कि लेखन-कार्य उससे पहले के काल में भी किया जाता होगा। श्रीलंका में अनुराधापुरा की खुदाई में छोटे लेखों वाले बर्तन के ठीकरे मिले हैं, जिसे चौथी शताब्दी बी.सी.ई. यानी मौर्य काल के पूर्व, का माना जा सकता है। संस्कृत का पहला शिलालेख लगभग पहली शताब्दी बी.सी.ई. का मिलता है। प्राकृत और संस्कृत के मिश्रण वाला प्रारंभिक अभिलेख लगभग 5वीं शताब्दी सी.ई. में मिलता है, जिसका स्थान बाद में शाही अभिलेखों की भाषा के रूप में संस्कृत ने ले लिया। अभिलेख विभिन्न प्रकार के थे। अशोक के शिलालेख राजकीय आदेश थे जो सामान्य रूप से अधिकारियों या लोगों को संबोधित थे व सामाजिक, धार्मिक और प्रशासनिक मामलों से संबंधित थे। अशोक का लुम्बिनी स्तंभलेख एक स्मारक शिलालेख है क्योंकि अशोक द्वारा की गई बुद्ध के जन्मस्थान की यात्रा को दर्ज करता है। फिर, सती (*sati* stones) तथा नायक (hero stones) के स्मारक मिले, जिनमें से कुछ पर अभिलेख मिलते हैं। मंदिर के निर्माण को रिकॉर्ड करने वाले दान अभिलेख सैकड़ों की संख्या में प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में दक्कन और दक्षिण भारत में पाए गए हैं। इनके अलावा, हमारे पास ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण राजकीय भूमि-अनुदानों के कई हजार अभिलेख मिलते हैं। ये दान के दस्तावेज़ हैं जो ब्राह्मणों और अन्य लाभार्थियों को दिए गए भूमि और अन्य वस्तुओं के अनुदान रिकॉर्ड करते हैं।

शिलालेख जो उनके संरक्षकों की प्रशंसा में लिखे गए हैं, एक प्रशस्ति के साथ शुरू होते हैं। उदाहरण हेतु प्रथम शताब्दी बी.सी.ई. से प्रथम शताब्दी सी.ई. के कलिंग (ओडिशा) के राजा खारवेल के हाथीगुम्फा शिलालेख और गुप्त राजा समुद्रगुप्त के (प्रयागराज) इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख हैं। कुछ शिलालेख बांध, जलाशय, टैंक, तथा धर्मार्थ भोजन घर आदि के निर्माण को रिकॉर्ड करते हैं। शक शासक रुद्रदमन के जूनागढ़ (गिरनार) शिलालेख में चंद्रगुप्त मौर्य के समय सुदर्शन झील नामक एक जलाशय के निर्माण का रिकॉर्ड है। अशोक के शासनकाल में इसे पूर्ण किया गया और लगभग दूसरी शताब्दी बी.सी.ई. में इसकी मरम्मत की गई। इस तरह विभिन्न प्रकार के शिलालेखों के अलावा, हम विविध प्रकारों जैसे भित्तिचित्र, धार्मिक सूत्र और मुहरों पर लेखन-कार्य पाते हैं।

अभिलेख राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक इतिहास का एक अच्छा स्रोत हैं। वे इतिहासकारों के लिए मूल्यवान हैं क्योंकि वे हमें समकालीन घटनाओं और आम लोगों के बारे में बताते हैं। उनका प्रसार राजा के विस्तार क्षेत्र के बारे में बताता है। कई शिलालेखों में वंशावली विवरण और कभी-कभी, उन राजाओं के नाम भी शामिल होते हैं, जो मुख्य वंशावली में छूट गए हैं। पल्लव, चालुक्य और चोल काल के भूमि अनुदान हमें समकालीन राजस्व प्रणालियों, कृषि विवरण और राजनीतिक संरचनाओं की जानकारी प्रदान करते हैं।

शिलालेखों के कई अन्य उपयोग भी हैं। उदाहरण के लिए, वे हमें मूर्तियों की तिथियों के बारे में बताते हैं। वे हमें विलुप्त होने वाले धार्मिक संप्रदायों के बारे में बताते हैं, वे हमें आजीवक पंथ, ऐतिहासिक भूगोल, मूर्तिकला का इतिहास, कला और वास्तुकला, साहित्य और भाषाओं का इतिहास और यहां तक कि संगीत जैसी कला के बारे में भी जानकारी देते हैं। वे साहित्यिक ग्रंथों की तुलना में अधिक विश्वसनीय हैं क्योंकि वे हमेशा धार्मिक नहीं होते हैं।

1.5.3 विदेशी वृत्तांत

कई आगंतुक, तीर्थयात्रियों, व्यापारियों, उपनिवेशिकों, सैनिकों तथा राजदूतों के रूप में भारत आए। उन्होंने जिन जगहों और वस्तुओं को देखा, उन पर अपना विवरण दिया। यदि इनका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया जाए तो ये लेख बहुत सारी ऐतिहासिक जानकारी देते हैं।

यूनानी लेखक सैंड्रोकोट्टस का उल्लेख करते हैं जिनके बारे में कहा जाता है कि वे एक युवा के रूप में सिकंदर से मिले थे। 18वीं शताब्दी में विलियम जोन्स ने सैंड्रोकोट्टस को चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में पहचाना जो मौर्य कालक्रम का आधार बना। सेल्यूकस के दूत मेगस्थनीज़ ने *इंडिका* में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में अपने ठहरने का विवरण दिया है। हालाँकि यह पाठ अब मौजूद नहीं है लेकिन बाद के लेखक इसके कुछ भागों का उल्लेख करते हैं जिससे मौर्य काल की प्रशासनिक संरचना, सामाजिक वर्गों और आर्थिक गतिविधियों का पुनर्निर्माण संभव हो पाया। ग्रीक और रोमन यात्रियों के विवरण प्रारंभिक भारत में हिन्द महासागर के व्यापार के बारे में उपयुक्त जानकारी देते हैं। *पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रिन सी* और टॉलेमी का *जियोग्राफी,* ग्रीक में लिखे गए दोनों ग्रंथ भारत के भूगोल और प्राचीन व्यापार के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। स्ट्रैबो, एरियन, प्लिनी द एल्डर के शुरुआती यूनानी और लैटिन विवरणों में हमें भारतीय समुद्री व्यापार के बारे में पता चलता है।

चीनी यात्रियों ने समय-समय पर भारत का दौरा किया। ये बौद्ध तीर्थयात्री के रूप में यहाँ आए थे और इसलिए उनके विवरणों में बौद्ध धर्म के प्रति झुकाव दिखाई देता है। उन्होंने कई पवित्र स्थानों और बौद्ध मन्दिरों का दौरा किया। फा-ह्यान ने 399-414 सी.ई के बीच

भारत की यात्रा की लेकिन उसकी यात्रा उत्तर भारत तक ही सीमित थी। ह्वेन-त्सांग ने 639 सी.ई. में ही अपना घर छोड़ दिया और भारत में 10 साल तक रहा। फा-ह्यान ने गुप्त और ह्वेन-त्सांग ने हर्षवर्धन के समय के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का वर्णन किया।

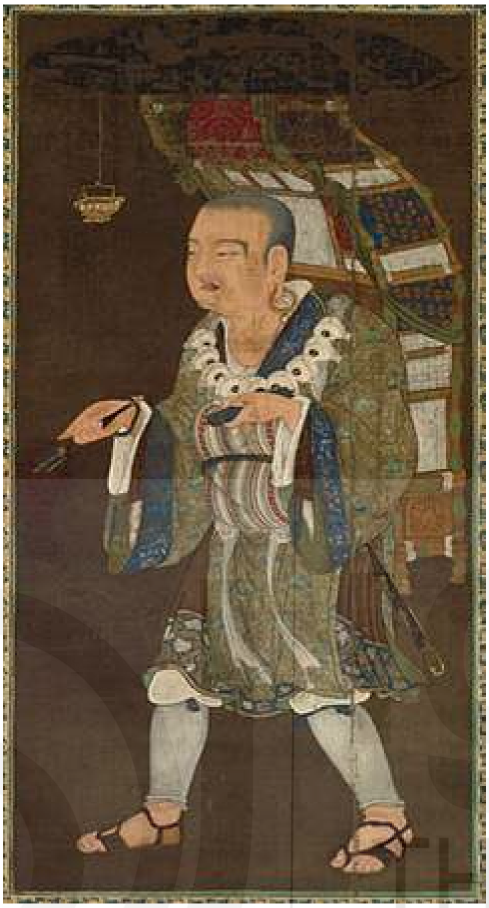

चीनी भिक्षु ह्वेन-त्सांग की अपनी भारत यात्रा का एक चित्रण टोक्यो राष्ट्रीय संग्रहालय। स्रोतः विकिमीडिया कॉमन्स। (https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/9/9a/Xuanzang_w.jpg).

बाद के समय में कुछ अरब यात्रियों ने भी भारत के बारे में अपने विवरण दिए। इन अरब विद्वानों में सबसे प्रसिद्ध अबू रिहान थे जिन्हें हम अल-बरूनी के रूप में जानते हैं। वे खिव (आधुनिक तुर्कमेनिस्तान) के क्षेत्र के थे। भारत के लोगों के बारे में जानने के लिए उन्होंने भारतीय ग्रंथों को उनकी मूल भाषा में अध्ययन किया। उनकी रचना *तहकीक-ए-हिन्द* वास्तव में एक विश्वकोष है। इसमें भारतीय लिपियों, विज्ञान, भूगोल, ज्योतिश, खगोल विज्ञान, दर्शन साहित्य, विश्वास, रीति-रिवाजों, धर्मों, त्योहारों, अनुष्ठानों, सामाजिक मानदंडों और कानूनों जैसे विषयों को शामिल किया गया है। अल-बरूनी की रचना 11वीं शताब्दी के भारत के लिए एक मूल्यवान ऐतिहासिक स्रोत हैं। उन्होंने पहली बार गुप्त संवत के शुरुआती वर्ष की पहचान कराई। अरब और भारत के लोग समुद्री व्यापार करते थे। अरब यात्रियों जैसे सुलेमान के विवरण में भारत का उल्लेख मिलता है।

बोध प्रश्न 2

1) **वेद** क्या है? चारों वेदों पर संक्षेप में चर्चा करें।

....

....

....

2) पुरातत्व क्या है? प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए मुख्य पुरातात्विक स्रोतों पर चर्चा करें।

....

....

....

1.6 सारांश

उत्तर में हिमालय और दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में महासागर उपमहाद्वीप के पृथक होने का एक सतही दृश्य बनाते हैं। इन सीमाओं पर सांस्कृतिक प्रभावों का आदान-प्रदान हुआ है और पश्चिम, पश्चिम एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ समुद्री संपर्क बनाए गए हैं। आंतरिक रूप से, यहां तक कि मध्य भारत के बीहड़, कठिन इलाकों ने वास्तव में देश के विभिन्न क्षेत्रों के बीच विचारों और प्रभावों की आवाजाही को बधित नहीं किया है। बेशक, भूगोल और पर्यावरण ऐतिहासिक विकास को काफ़ी प्रभावित करते है, फिर भी वे इसे पूरी तरह से निर्धारित नहीं करते। अगर कोई यह समझना चाहता है कि मनुष्यों और उनके पर्यावरण के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान कैसे होता है, तब पारिस्थितिकी एक उपयोगी अवधारणा है।

अभिलेख हमें ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में बहुत कुछ बताते हैं। ये घटनाएं एक विशिष्ट समय और स्थान पर घटित हुई। हालाँकि, शिलालेख और साहित्यिक ग्रन्थ ज्यादातर कुलीनों – राजाओं, ब्राह्मणों, दरबारी कवियों आदि की आवाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ पुरातात्विक स्रोत बचाव में आते हैं। वे आम लोगों की भावनाओं को प्रकट करने में सक्षम है। उत्खन्न, विशेष रूप से, एक उपयोगी स्रोत है। फिर भी, हमें साहित्यिक साक्ष्य के साथ पुरातात्विक साक्ष्य का अध्ययन करने की आवश्यकता है। कई बार अगर हम सबूतों की इन दो श्रेणियों को साथ लेकर चले तो हम पाते है कि प्रत्येक दूसरे को सही और पुष्ट करता है और एक अधिक संपूर्ण तस्वीर बन पाती हैं।

1.7 शब्दावली

पुरातत्व (Archaeology)	:	अतीत को समझने के लिए विभिन्न वस्तुओं के अवशेषों का अध्ययन।
ताम्रपाषाण (Chalcolithic) संस्कृति	:	वह संस्कृतिक जिसमें पत्थर और तांबे के उपकरण का उपयोग किया जाता है। यह नवपाषाण के बाद का काल है।
पर्यावरण	:	वह परिवेश या स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति, जानवर या पौधा रहता है या संचालित होता है।
स्तवन (Eulogy)	:	भाषण या लेखन का एक अंश जो किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की अत्यधिक प्रशंसा करता है, अर्थात् एक प्रकार की श्रद्धांजलि।
भौगोलिक नियतत्ववाद (Geographical Determinism)	:	भौतिक वातावरण समाज और राज्यों को विशेष रूप से विकास के अनुमानों की और कैसे प्रेरित करता है।
हड़प्पा सभ्यता	:	वह सभ्यता जो सिंधु-गंगा के मैदानों में लगभग 2600-1800 बी. सी. ई. के दौरान फली-फूली। इसके मुख्य

शहर थे हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगन इत्यादि।

मानव परिस्थितिकी (Human Ecology) : मानव और उनके प्राकृतिक, सामाजिक और निर्मित वातावरण के बीच संबंध।

केन्द्रीय क्षेत्र : वे क्षेत्र जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विकास द्वारा सत्ता के स्थायी केन्द्रों में बदल जाते हैं।

पुरावनस्पति विज्ञान (Palaeobotany) : जीवाष्म पौधों का अध्ययन। यह जीवाष्मिकी की शाखा है जो भूवैज्ञानिक संदर्भों में पौधों की पहचान से संबंधित है और जिन्हें अतीत के जैविक पुनर्निर्माण के लिए उपयोग किया जाता है।

लवणता (Salinity) : मिट्टी में नमक सामग्री के बढ़ने की प्रक्रिया।

1.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भारत के मुख्य भूआकृतिक विभाजन हैं – हिमालय के पर्वतीय प्रदेश, सिंधु गंगा के मैदान और प्रायद्वीप भारत (विवरण के लिए देखें भाग 1.2)

2) यहां आप क्षेत्रों की प्रकृति पर चर्चा करेंगे। क्षेत्रों को स्थायी केन्द्रीय क्षेत्र, अपेक्षाकृत अलग-थलग क्षेत्र तथा अलग-थलग क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है। आपको प्रत्येक की विशेषताओं पर चर्चा करनी होगी। भाग 1.4 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) **वेद** शब्द **'विद'** से लिया गया है जिसका अर्थ है 'जानना'। **वेद** का अर्थ है 'ज्ञान'। चार **वेद** हैं : **ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद** तथा **यर्जुवेद**। (विवरण के लिए उपभाग 1.5.1 देखें)।

2) पुरातत्व विज्ञान वह शाखा है जो अतीत को समझने के लिए भौतिक सामग्री का अध्ययन करती है। प्राचीन भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए उत्खन्न, अन्वेषण, सिक्के और अभिलेख मुख्य पुरातात्विक स्रोत है (विवरण के लिए देखें उपभाग 1.5.2)।

1.9 संदर्भ ग्रन्थ

चक्रबर्ती, डी. के. (2014). एडीटोरियल. एस्पेक्ट्स ऑफ हिस्टोरिकल ज्योगरफी. इन चक्रबर्ती, डी. के. एंड लाल, माक्खन (ऐड्स). *हिस्टीं ऑफ ऐशियन्ट इंडिया, वॉल्यूम 1, प्रीहिस्टोरिकल रूट्स.* दिल्ली : विवेकानन्द इंटरनेशनल फाऊंडेशन एंड आर्यन बुक्स इंटरनेश्नल.

शर्मा, आर. एस. (2005). *इंडियाज ऐशियन्ट पास्ट.* ऑक्सफार्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

सिंह, उपिंदर (2008). *ए हिस्ट्री ऑफ ऐशियन्ट ऐंड अर्ली मेडिवल इंडिया : फ्रॉम स्टोन ऐज़ टू द 12वी सेन्चूरी.* डोरलिंग किन्डर्सले (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड.

सुब्बाराव, बी. (1958). *द पर्सनेलिटी ऑफ इंडिया.* बरोडा

थापर, रोमिला (2002). *द पेन्गुईन हिस्ट्री ऑफ अर्ली इंडिया. फ्रॉम द ओरिजिन्स टू ए. डी. 1300.* पेन्गुईन बुक्स.